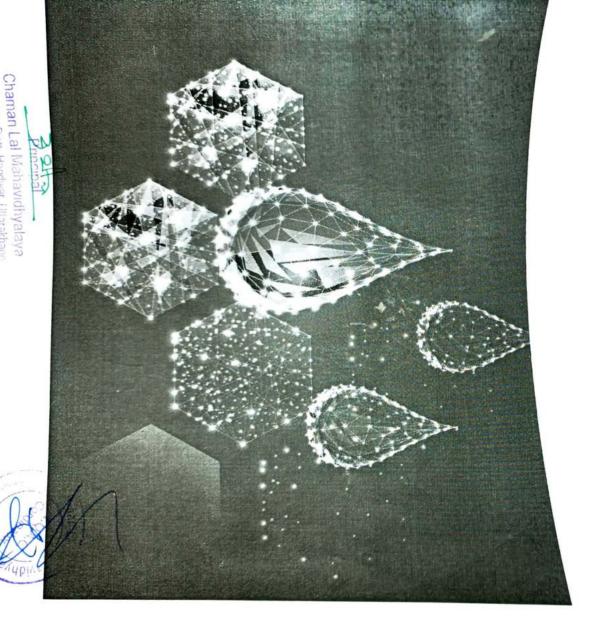
Edited by Arvind Kumar, Dinesh K. Aswal, and Nirav Joshi

# Hybrid Nanostructures 1D Semiconducting

and Optoelectronics Synthesis and Applications in Gas Sensing



### 1D Semiconducting Hybrid Nanostructures

Synthesis and Applications in Gas Sensing and Optoelectronics

Edited by Arvind Kumar, Dinesh K. Aswal, and Nirav Joshi



WILEY-VCH

#### Editors

### Dr. Arvind Kumar

Chaman Lal (P.G.) College Department of Physics Chaman Lal Mahadidhyalaya Haridwar India

#### Dr. Dinesh K. Aswal

CSIR-National Physical Laboratory New Delhi India

### Dr. Nirav Joshi

University of Sao Paolo Sao Caro Institute of Physics Sao Paolo Brazil

Cover Image: © Inkoly/Shutterstock



All books published by WILEY-VCH are carefully produced. Nevertheless, authors, editors, and publisher do not warrant the information contained in these books, including this book, to be free of errors. Readers are advised to keep in mind that statements, data, illustrations, procedural details or other items may inadvertently be inaccurate.

Library of Congress Card No.: applied for

### British Library Cataloguing-in-Publication Data:

A catalogue record for this book is available from the British Library.

### Bibliographic information published by the Deutsche Nationalbibliothek

The Deutsche Nationalbibliothek lists this publication in the Deutsche Nationalbibliografie; detailed bibliographic data are available on the Internet at <a href="http://dnb.d-nb.de">http://dnb.d-nb.de</a>>.

© 2023 Wiley-VCH GmbH, Boschstraße 12, 69469 Weinheim, Germany

All rights reserved (including those of translation into other languages). No part of this book may be reproduced in any form – by photoprinting, microfilm, or any other means – nor transmitted or translated into a machine language without written permission from the publishers. Registered names, trademarks, etc used in this book, even when not specifically marked as such, are not to be considered unprotected by law.

Typesetting Straive, Chennai, India

Print ISBN 978-3-527-35027-8 ePDF ISBN 978-3-527-83766-3 ePub ISBN 978-3-527-83765-6 oBook ISBN 978-3-527-83764-9 Uttarakhand NEP 2020 1st Semester



# MICROBES, ALGAE, FUNGI AND BRYOPHYTES

- T.S. Dhaka
- Richa Chauhan
- Balwant Kumar







A Pragati Edition

### MICROBES, ALGAE, FUNGI **AND BRYOPHYTES**

(Strictly According to National Education Policy 2020 and Common Minimum Syllabus for all Utterakhand State Universities and Colleges for B.Sc. Ist Year, Ist Semester Students)





### Dr. T. S. DHAKA

Asso. Prof. & Head (Retd.) Department of Botany D.A.V. College, Muzaffarnagar (U.P.)

### Dr. Richa Chauhan

Assistant Professor Incharge Deptt. of Botany Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhora, Haridwar

### Dr. Balwant Kumar

M.Sc., Ph.D.

Head, Department of Botany Soban Singh Jeena University (Almora)







1. 1. Take ... MA

PRAGATI PRAKASHAN





Microbes, Algae, Fungi and Bryophytes

Author: Dr. T.S. Dhaka, Richa Chauhan, Balwant Kumar



### PRAGATI PRAKASHAN

Educational Publishers

- # PRAGATI BHAWAN 240, W. K. Road, Meerut-250 001
- (0121) 2640642, 2643636, 3500119
- pragatiprakashan@gmail.com
- pragatiprakashan@gmail.com
  www.pragatiprakashan.co.in;
- www.pragatiprakashan.co.

First Edition 2022

ISBN: 978-93-5531-782-7

Price : ₹ 320/-

Published by : A.K. Mittal for Pragati Prakashan, Meerut-250 001, Laser Typesetting Pragati Laser Type Setters Pvt. Ltd., Meerut and Printed at : Bhawani Printers, Meerut.

### **PREFACE**

It gives me pleasure to present "Elementary Text Book of Botany" for undergraduate students of botany. The present book of botany includes microbes, algae, fungi and bryophytes.

B.Sc. I year, Sem. I, NEP 2020, recommended by Shri Dev Suman Uttarakhand University, Uttarakhand. This book compiles the fundamentals of the subject in reproducible and comprehensive manner.

The language of the book is simple, and easily graspable with illustrated self explanatory labelled diagrams taken from authentic sources.

The subject matter is taken from standard books, Internet media and other sources. Author does not claim the matter to be original and thanks to all those authors who have written those articles. The book is written in short sentences to benefit the students especially during their examination.

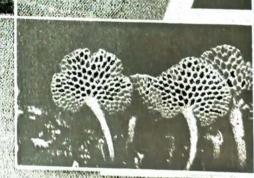


Uttarakhand NEP 2020

1st Semester

# सूक्ष्मजीव, शैवाल, कवक एवं ब्रायोफाइट्स

- दीव्हराव ताका
- ्रामान्यां हो।
- ে ভৌলেন্ডিয়ে কেন্দ্রাচ্চ



A Pragate Edition

# सूक्ष्मजीव, शैवाल, कवक एवं ब्रायोफाइट्स (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं सामान्य न्यूनतम पाठ्यक्रम के अनुसार सभी उत्तराखण्ड विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों के बी.एस.सी प्रथम वर्ष,

प्रथम सेमेस्टर, विद्यार्थियों के लिए)

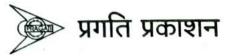


डॉ॰ टी॰ एस॰ ढाका तिभाग वनस्पति विज्ञान डी.ए.वी. कॉलेज मुजफ्करनगर

डॉo ऋचा चौहान असिस्टेंट प्रोफेसर विभाग इंचार्ज वनस्पति विज्ञान चमन लाल महाविद्यालय लंदौरा, हरिद्वार

डॉ॰ बलवंत कुमार विभाग वनस्पति विज्ञान सोबान सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मौडा







सूक्ष्मजीत, शंदाल, क्यक एव मान्स्य स्वादंत कुमार लेखक : डॉ. टी.एस. ढाका, ऋचा चौहान, बतदंत कुमार

PRAGATI PRAKASHAN

Educational Publishers

 PRAGATI BHAWAN 240, W. K. Road, Meerut-250 001
 (0121) 2640642, 2643636, 3500119

. .24- -

■ support@.pragatiprakashan.in ■ pragatiprakashan@gmail.com

■ pregatiprakashan@gmail.com
⊕ www.pragatiprakashan.co.in;
⊕ www.pragatiprakashan.in

Mittel for Branchi Brakashan Meerut-250 001, Laser Typesetting:

First Edition 2022

ISBN: 978-93-5531-785-8

Price : ₹ 320/-

स्नातक स्तर पर वनस्पित विज्ञान नई शिक्षा प्रणाली 2020 पाठ्यक्रम के अनुरूप प्रस्तुत पुस्तक "सूक्ष्म जीव, शैवाल, कवक एवं ब्रायोफाइटस" को श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड बी॰एस॰सी॰ प्रथम वर्ष प्रथम सेमेस्टर के अध्यापकों एवं छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

पुस्तक की सरल एवं सुग्राही भाषा में लिखा गया है। हिन्दी भाषा में लिखी गयी यह पुस्तक पाठकों को लाभान्वित करेगी ऐसी पूर्ण आशा व विश्वास है। सभी चित्रों को अंग्रेजी में नामांकित किया ंगया है ताकि छात्र अंग्रेजी शब्दावली को भी साथ-साथ समझ सकें। कई स्थानों पर दोनों भाषाओं का साथ-साथ प्रयोग छात्रों को हिन्दी शब्दावली को समझने में सहायक होगा। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में नवीनतम जानकारियों एवं चित्रों को विषय-वस्तु के अनुसार सरल रूप में समावेशित करने का यथासम्भव प्रयास किया गया। पूर्ण विश्वास है कि यह प्रयास विद्यार्थियों को अवश्य लाभान्वित करेगा।

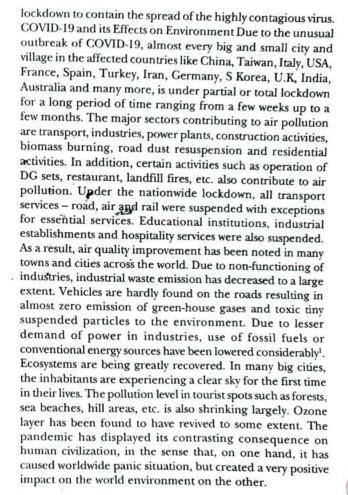
प्रस्तुत पुस्तक के लिए विषय सामग्री को विभिन्न स्रोतों से एकत्र किया गया है। अतः लेखक विषय वस्तु के मौलिक होने का 21

### Sustainable Development Goals in the Pandemic Covid-19

Dr. Richa Chauhan and Dr. Deepa Agarwal

### Introduction

On late November 2019 in Wuhan city, in China, an unusual pneumonia was noticed with a link to an animal market that sells poultry and other animals to the public. This event was soon reported to the World Health Organization (WHO). The causal microorganism had been identified as a novel coronavirus that was named COVID-19. COVID-19 soon spread to other parts of the world. The World Health Organization has declared the situation a pandemic: The COVID-19 pandemic has impacted every aspect of human life and the global economy. The number of new cases and deaths is increasing at an alarming rate with no signs of control yet, making the estimates of its economic and other impacts uncertain (1). Depending on the level of COVID-19 impact in each country, as well as country-specific situations and capacity, the world's Governments are adopting different levels of interventions, including travel restrictions and



### 10 Impacts of Coronavirus on the Environment

As the COVID-19 pandemic increased exponentially





<sup>\*</sup> Assistant Professor, Department of Botany, Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura, Haridwar

<sup>\*\*</sup> Assistant Professor, Department of English, Chaman Lal Mahavidhyalaya, Landhaura, Haridwar

# कोरोना

का आर्थिक-सामाजिक प्रभाव

संकलन एवं सम्पादन

डॉ० कनुप्रिया





प्रगतिशील प्रकाशन नई दिल्ली(भारत)





इस पुस्तक में दी गई सामग्री एवं व्यक्त विचारों के मौलिकता का वाधित्व पूर्णतः लेखक/ लेखिका/सम्पादक/सम्पादिका/संकलनकर्ता/संकलनकर्ती का है तथा किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुदक तथा प्रकाशक का कोई भी वाधित्व नहीं होगा।

ISBN: 978-93-93112-05-7

प्रकाशक-

### प्रगतिशील प्रकाशन

एन-3/25, प्रथम तल, मोहन गार्डन,

उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 (भारत)

चलभाष : +91-9968277749

ई-मेल : pragatisheelprakashan@yahoo.in

### कोरोना का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

मूल्य : ₹ 795.00 प्रथम संस्करण : 2022

**.** © सुरक्षित - ->--- -



प्रस्तुत पुस्तक का किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुपति के बिना पुद्रण, वितरण एवं पुन: प्रकाशन करना दण्डनीय अपराध है, तथा ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भारत में प्रकाशित-

'प्रगतिशील प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित। एस॰ के॰ ग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

### भूमिका

दुनिया के इतिहास में साल 2020 'कोरोना महामारी' के बुरे समय के रूप में याद किया जाएगा। कोविड-19 महामारी से दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाएं बुरी तरह प्रभावित हुई। इस महामारी का प्रभाव इतना अधिक था कि इसने दुनिया की तेज रफ्तार को रोककर लोगों को घरों में कैद कर दिया। यह एक ऐसी त्रासदी थी, जिसने विकसित अर्थव्यवस्थाओं को भी रुक कर सोचने के लिए मजबूर कर दिया। अनिश्चिताओं के इस दौर में भारत के सामने भी अनेक सामार्जिक एवं आर्थिक चुनौतियां पैदा हुईं। भारत की उभरती अर्थव्यवस्था को इससे बड़ा इंटैंका लगा और लगभग प्रत्येक आर्थिक गतिविधि का तेजी से संकुचन हुआ, लेकिन भारत सरकार ने इस आपदा को अवसर में बदलने का काम किया और एक आत्मिनर्भर भारत की नींव रखी। इस महामारी का सामना करने के लिए सरकार ने जो त्वरित और सामाजिक निर्णय लिए एवं लागू किए, उनकी सराहना राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुई। इन्हीं निर्णयों का परिणाम है कि अब भारत दुनिया की सर्वाधिक तेजी से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था कन गया है।

कोविड-19 का सबसे अधिक प्रभाव छोटे एवं मध्यम श्रेणी के उद्योगों पर पड़ा, जिससे सरकार को भी बड़ा आर्थिक नुकसान हुआ तथा बेरोजगारी का आंकड़ा आसमान छूने लगा। इसी को ध्यान में रखकर सरकार ने इन उद्योगों के माध्यम से बेरोजगारी को कम करके अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का कार्य किया और 20 लाख करोड़ के आर्थिक राहत पैकेज की घोषणा कर इन उद्योगों का पुन: संचालन प्रारंभ किया। बाद में इस पैकेज को बढ़ाकर 30 लाख करोड़ किया गया।

लॉकडाउन के कारण सभी शिक्षण संस्थानों के बंद हो जाने के बाद पारम्परिक पद्मित बाली शिक्षा को ऑनलाइन शिक्षा के रूप में लाया गया। तब यह समस्या उत्पन्न हुई कि अधिकांश शिक्षण संस्थान, छात्र-छात्राएं तथा शिक्षक इस नई पद्मित को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं थे। परंतु सरकार ने इस क्षेत्र की





### © संपादक



### प्रकाशक

### नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

①:+9968082809,9315194807

⊠: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022

अक्षर सयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमित के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सिहत इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

### Bhartiye Samaj Me Nari: Vividh Aayam

by Dr. Rukmesh Chauhan

Dr. Payal Lamba

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Distt -Haridwar Uttarakhano

al Wahai day a dinator dinator

12.

# भारत में समलैंगिकता : सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण

डॉ. नीशू कुमार\*

मनुष्य ने समाज का निर्माण किया ताकि वह चिन्ता, समस्याओं, परेशानियों से निश्चिन्त हो सके। ताकि जिम्मेदारियाँ सामूहिक रूप से उठाई जा सकें। आदमी अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त होकर अपना विकास कर सके। समाज उसके भले के लिए बना था लेकिन ज्यों-ज्यों मनुष्य सभ्य होता गया त्यों-त्यों समाज के नियम, निषेध बढ़ते गए और समाज के नियम निषेधों ने अपनी जकड़ में आदमी को लेना शुरू किया। आज स्थिति यह है कि इंसान समाज के लिए है समाज इंसान के लिए नहीं आदमी साँस भी लेता है तो उसे चिन्ता होती है पता नहीं उसकी इस हरकत को समाज किस रूप में लेगा। कई बार समाज आदमी को जकड़ कर उसकी सम्भावनाओं, उसकी कुशलताओं, उसकी प्रतिभा को नष्ट कर डालता है। समाज चाहता है

\*असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा, रूडकी. हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।



# भारतीय समाज में नारी : विविध आयाम



नालंदा प्रकाशन

दिल्ली



# भारतीय समाज में नारी:

संपादक डॉ. रूकमेश चौहान सह-संपादक डॉ. पायल लाम्बा

Chaman Lal Mahavidhyalaya



anonamathing

नालंदा प्रकाशन दिल्ली



डॉ. नीश् कुमार

शिक्ता – एम.ए. एम.फिल, यू.जी.सी नेट, पीएच.डी.।

सम्मान – पुरस्कार

1. लिटरेचर अवार्ड सरस्वती भास्कर सम्मान हरियाणा संस्कृति एकेडमी, पंचकुला, हरियाणा ।

 यंग फैकल्टी ऐक्सीलेंस अवार्ड, विवेकानंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइस फॉर वूमन इस्टीट्यूट त्रिचुंगोडे नमक्कल तमिलनाडु इनोवेशन काउंसिल ऑफ विकास

अनुभव — 5 वर्ष समन्वयक / आयोजन सचिव / सेमिनार व कार्यशाला—

 जम्मू – कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंकवाद की समस्या : दशा एवं दिशा, प्रायोजित आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली, 14.15 अक्टूबर, 2017

तीन तलाक. एक सामाजिक एवं राजनीतिक विषयं, प्रायोजित एन आर.सी. आई.सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली,
 30<sup>TM</sup> मार्च, 2017

· 21वीं सदी में महिला सुरक्षा समस्याएँ एवं चुनीतियाँ, प्रायोजित आई सी एस एस.आर. नई दिल्ली, 21 अक्टूबर, 2018.

गुरुकुल रिक्षा पद्धति एवं आधुनिक परिवेश में इसकी प्रासगिकता, प्रायोजित इम्प्रैस, नीति आई सी एस एस आर. नई दिल्ली 16 से 22 सितम्बर, 2019.

• द बुक्सा : सोशल स्टडी ए ट्राइब कम्यूनिटी ऑफ उत्तराखण्ड, आई सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली।

किसानों की आत्महत्याओं से सुलगता भारत. सम्प्र्या एवं चुनीतियाँ, प्रायोजक एन आर सी आई सी एस एस आर , नई दिल्ली, 10 मार्च, 2021.

वीर सावरकर के व्यक्तित्व और क्तित्व का समग्रता में मूल्यांकन प्रायोजित आई सी एव आर., नई दिल्ली, 08.09 मार्च,
 2021,

 "दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एव विकास में भारत की भूमिका", प्रायोजक आई.सी.डब्लू ए. नई दिल्ली, 6.7 मार्च, 2021

 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के अनभुए पहलू — एक विश्लेषण आयोजक राजनीति विकान विभाग चमनलाल महाविद्यालय लम्बीरा प्रायोजित आई सी एच आर नई दिल्ली 18.17 अक्टूबर 2021

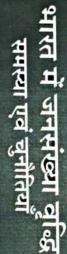
#### सम्यादिक : प्रकाशित पुस्तकें-

- जम्मू-कश्मीर पाक प्रतियोजित आतकवाद
- जान्मू-कश्मार पाक प्रातयाजित स्नातकवाद
- तीन तलाक एक सामाजिक एव राजनीतिक विमर्श
   महिला संशक्तिकरण और सुरक्षा विषयक चुनौतियाँ
- महिला सुरक्षा मुद्दे एवं चुनौतियाँ
- 21वीं सदी में महिला सुरक्षा समस्यौ एव चुनौतियौ
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गुरूकुल शिक्षा पदाति का महत्व
- गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक परिवेश में इसकी
   पासंगिकता
- दक्षिण एशिया में राजनीतिक स्थिरता एव विकास में
- किसानों की आत्महत्याओं से सुलगता भारत : समस्याएँ एवं चुनौतियाँ
- वीर सावरकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक विश्लेषण
- मारत में किसानों की आत्महत्या दशा और दिशा दक्षिण एशिया की राजनैतिक एवं सामासिक संस्कृति में मारत की ममिका?
- भारतीय समाज मै महिला सशक्तिकरण सम्पूर्ण समाज का उत्थान
  - भारतीय राजनीतिक चिंतन की परम्परा
  - 1857 के स्वतंत्रता समर राष्ट्रीय एकता की वीर गाया
- लघु शोध परियोजनाएं— "मारत सरकार की बेटी "बदाओं बेटी पढाओं योजना" की आवश्यकता और उसकी उपयोगिता का विश्लेषणात्मक अध्ययन (हरियाणा के नेवात और महेन्द्रगढ जिले का विशेष अध्ययन)" प्रायोजित आई. सी.एस.एस.आर. नई दिल्ली, 2017—18.
- पं. दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विन्तन का ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक अध्ययन एकाल्म मानववाद के विशेष सन्दर्भ में प्रायोजित आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली, 2018–19।
- विकलाग महिलाओं में मानसिक व शारीरिक रूप से बढ़ती हुई सामाजिक उपेक्षा एप असुरक्षा की गावना का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन उत्तराखड़ राज्य के विशेष सदर्भ में आयोजक रा. विज्ञान विनाग सम्पोषित उत्तरी क्षेत्रीय केन्द्र मारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली 2021—2022

मो.न./ई.मेल. 8126501692 / nishubhati 1988@gmail.com

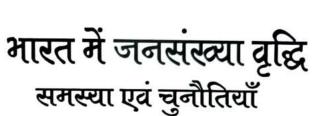






डॉ. नीशू कुमार













# भारत में जनसंख्या वृद्धि : समस्या एवं चुनौतियाँ

संपादक डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Chaman Lat Mahavidhyalaya Landkeura Dich Houdwar Itranskhano

> नालंदा प्रकाशन दिल्ली

(B)

ISBN: 978-93-91018-72-6

© संपादक



### प्रकाशक

### नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

①:+9968082809,9315194807

⊠: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022

अक्षर सर्योजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमित के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सिहत इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharat Mai Jansankhya Vardhi : Samshya Evam Chunotiya

by Dr. Nishu Kumar

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura, Distt -Haridwar Ettarakhano



1.

# भारत में जनसंख्या वृद्धि : समस्या एवं चुनौतियों पर एक विमर्श

डॉ. नीशू कुमार\*

किसी भी राज्य को राज्य होने के लिए चार तत्वों की जरूरत होती है, वे तत्व हैं भूमि, जनसंख्या संप्रभुता और सरकार। इसमें से किसी एक तत्व की भी कमी राज्य को राज्य होने से वंचित कर देता है। भूमि की रक्षा करना सरकार व संप्रभुता के प्रति निष्ठावान बने रहना किसी भी राज्य में नागरिकों के देशभक्त होने का द्योतक होता है, किन्तु भारत के परिप्रेक्ष्य में सीमित परिवार अर्थात् जनसंख्या में अमर्यादित वृद्धि न करना भी देशभिक्त मानी जाती है। 15 अगस्त 2019 को भारतीय प्रधानमंत्री मा. नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि समाज का वह लघु वर्ग जो अपने परिवार को छोटा रखता है वह सम्मान का हकदार है। वह जो कर रहा है वह देशभित्रत का कार्य है। किसी भी देश में भूमि और जन के बीच अन्योन्याश्रित संबंध होता है, इसलिए प्राचीन राजनीतिक चिंतक मनु एवं कौटिल्य भी कहते हैं कि भूमि इतनी होनी चाहिए कि प्रजा का पालन ठीक ठीक हो सके, किन्तु आज की परिस्थितियों में भूमि तो स्थिर है पर जन की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। ऐसी दशा में भारत में उपलब्ध संसाधन जनसंख्या

<sup>\*</sup>सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिकार, उत्तराखण्ड।



# आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकता

### संपादक

डॉ. नीशू कुमार सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड।





नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Leedhaura, Distt -Handwar Uttarakhano





ISBN: 978-93-91018-66-5

© संपादक



प्रकाशक नालंदा प्रकाशन नई दिल्ली

①: +91-9968082809,+9315194807

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022

अक्षर संयोजक दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुदक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। संपादक की लिखित अनुमित के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Aachariya Vinoba Bhave ke Darshan ki Aadhunik Bhartiye Samaj Mei Prasangikta

by Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
andhaura Distt Haridwar Uttarakhano



1.

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Chaman Disti Haridwar Uttarakhano

### आचार्य विनोबा भावेः

# सामाजिक न्यायिता का राजनीतिक विमर्श

डॉ. तीर्थ प्रकाश\* डॉ.नीशू कुमार\*\*

भारतीय ज्ञान दर्शन एवं चिन्तन के सैद्धान्तिक एवं व्यावाहारिक पटल पर ऐसे तो अनेक महान आत्माओं की उपस्थिति गौरावान्वित करती है। किन्तु एक राष्ट्रीय शिक्षक, सर्वोदय के वास्तिवक शिल्पकार, श्रम के पुजारी और सच्चे अर्थो में गांधी के उत्तराधिकारी आचार्य विनोबा भावे अद्वितीय है। हम सभी जानते हैं कि मानव जीवन की सबसे बड़ी दुश्वारी निर्धनता है अर्थात् गरीबी एक ऐसा अभिशाप है जो सभी प्रकार के शोषण का कारक है। यह आदमी के आत्म सम्मान को नष्ट कर देती है। उसे बेकारी, बीमारी और अज्ञानता के कुचक्र में जकड़ कर समाज के अन्तिम पायदान पर रहने को विवश कर देती है। वर्तमान भारतीय समाज भी उक्त सभी दानवों का शिकार है। महाराष्ट्र के एक गाँव गागोदा में 11 सितम्बर 1895 में जन्मे विनोबा भावे अध्ययनशील व्यक्ति थे, उपनिषद, गीता, ब्रह्मसूत्र, भाष्य पांतजिल, योग

<sup>\*</sup>एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय मंगलौर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

\*\*सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चमनलाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार,
उत्तराखण्ड।





### नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2019 एवं राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टरः एक विमर्श

### संपादक

डॉ. नीशू कुमार सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड

डॉ. तीर्थ प्रकाश सह-आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग राजकीय महाविद्यालय, मंगलौर हरिद्वार, उत्तराखण्ड



नालंदा प्रकाशन

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Disti -Haridwar Uttarakhann



ISBN: 978-93-91018-35-1

© संपादक



प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन नई दिल्ली

.....

①:+91-9968082809,+9315194807

⊠ : nalandaaprakashan@gmail.com
प्रथम संस्करण- 2023

अक्षर संयोजक दीपिक शर्मा, दिल्ली-94

मुदक

नुद्रक ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Nagrikta Sansodhan Adiniyam, 2019 Evam Rastriye Nagrik Ragister: Ek Vishleshan

Dr. Nishu Kumar & Dr. Tirth Prakash

Principal
Chaman Lal Mohavidhyalaya



एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली हारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Nagrikta Sansodhan Adiniyam, 2019 Evam Rastriye Nagrik Ragister: Ek Vishleshan

Dr. Nishu Kumar & Dr. Tirth Prakash

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Lare 1 Fort Persper Utlandhano



# भारतीय राष्ट्रवाद में बाल गंगाधर तिलक का योगदान

### संपादक

डॉ. अनिल कुमार

सहायक आचार्य इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय मरगूबपुर, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखंड। सह-संपादक गीता कुमारी

प्रिंसिपल

महाराजा अग्रसेन बालिका इण्टर कॉलेज देवरिया, उत्तर प्रदेश

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Disti -Haridwar Uttarakhand





नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

ATI



ISBN: 978-93-91018-69-6

© संपादक



### प्रकाशक

### नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

①:+9968082809,9315194807

⊠: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2023

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

टाईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमित के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharatiya Rashtravad Mei Bal Gangadhar Tilak Ka Yogdan

By: Dr. Anil Kumar & Geeta Kumari

Principal

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhand

2.

# बाल गंगाधर तिलक के राजनीतिक विचारों की आधुनिक समाज में प्रासंगिकता

डॉ. नीशू कुमार\* डॉ. गिरिराज सिंह\*\*

भारतीय राजनीति दर्शन अति प्राचीन है। जबिक अन्य देशों में इसका ज्ञान भी नहीं था तब भारतीय चिन्तन सर्वोच्च शिखर को छू रहा था। राजनीतिक चिन्तन की यह गौरवशाली परम्परा वैदिक युग से लेकर आज तक बनी हुई है। विदेशी आक्रमण और अंग्रेजों की गुलामी ने भारत की बौद्धिक क्षमता का विनाश किया है। वे यहाँ के राजनीतिक चिन्तन को मूर्खतापूर्ण रहस्यवाद से परिपूर्ण बताकर गलत धारणाओं को विकसित करने में लगे रहे। विशेष रूप से मैक्समूलर और ब्लूमफील्ड ने उक्त धारणा विकसित करने में अहम् भूमिका अदा की है। वास्तविकता यह है कि भारतीय दर्शन की मनु से लेकर आज तक एक अनवरत परम्परा रही है। तिलक भारतीय स्वतंत्रता के अग्रदूत थे। उनका जीवन खुली पुस्तक के समान था। उनमें देशभिक्त की प्रबल भावना थी।

<sup>\*</sup>सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, रूड़की, हरिद्वार उत्तराखंड । \*सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, मरगूबपुर, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखंड ।

1.

# सतत विकास की चुनौतियों में बढ़ती हुई जनसंख्या: एक विश्लेषण

डॉ. नीशू कुमार\* अनुज कुमार भडाना\*\*

### प्रस्तावना

भारत जैसे देश में जहाँ प्राकृतिक भूगोल की विविधता है बल्कि मानव जाति के बीच विभिन्न आधारों पर विविधता बनी हुई है। जिसमें नस्ल, समुदाय, धर्म आदि प्रमुख हैं जिसको अनेक बार दार्शनिक चिंतकों के द्वारा भारत का एक विशिष्ट गुण बताया गया किंतु इस विविधता के बीच सामजस्य और समझौतावादी, दृष्टिकोण भारत की विकासात्मक संरचना में एकरूपता का पहलू ना होने के कारण चुनौती और संघर्ष का विमर्श बना हुआ है। क्योंकि एक जनसंख्या जो सीमित जनसंख्या के माध्यम से देश को आर्थिक, सांस्कृतिक आधारों पर एक नया भारतीय राष्ट्रवाद देने का कार्य कर रही है। वही एक धार्मिक आधार पर अन्य जनसंख्या अप्रत्याशित रूप

Chaman Lal Mahavidhyalaya

To Tollaura (Harding

<sup>\*</sup>सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढीरा, हरिद्वार।

<sup>\*\*</sup>शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, एम.एम.एच., कॉलेज गाजियाबाद, उ.प्र।



# भारत में जनसंख्या वृद्धि: समस्या एवं चुनौतियाँ

संपादक डॉ. जीशू कुमार सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distl-Handwar Uriarakhano





नालंदा प्रकाशन दिल्ली

All

ISBN: 978-93-91018-72-6

© संपादक



### प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

①:+9968082809,9315194807

⊠: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022

अक्षर सर्योजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमित के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharat Mai Jansankhya Vardhi : Samshya Evam Chunotiya

by Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhano

TH

# आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकता

Principal
Champe Lat Mahayidhyalaya



नालंदा प्रकाशन दिल्ली

Jul



# आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकता

### संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Chaman Lai Mahavidhyalaya Landhaura, Disti -Handwar Uttarakhano



नालंदा प्रकाशन

दिल्ली

All S

ISBN: 978-93-91018-66-5 © संपादक



प्रकाशक नालंदा प्रकाशन नई दिल्ली

①:+91-9968082809,+9315194807

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुदक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Aachariya Vinoba Bhave ke Darshan ki Aadhunik Bhartiye Samaj Mei Prasangikta

by Dr. Nishu Kumar

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya Theres, Distt-Handwar Uttarakhang



# भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा

संपादक डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Chaman Lai Mahavidhyalaya

Chamer Ch



नालंदा प्रकाशन

दिल्ली भी

ISBN: 978-93-91018-53-5

© संपादक



#### प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

नई दिल्ली

①:+91-9968082809,+9315194807

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुद्रक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित है। संपादक की लिखित अनुमित के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

**BHARTIYE RAJNITIK CHINTAN KI PARAMPARA** 

by Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Handwar Ultarakhann

1.

## भारतीय चिंतन के विकास का एक विश्लेषण

डॉ. नीशू कुमार\* डॉ. तीर्थ प्रकाश\*\*

#### प्रस्तावना

मानव जीवन का अस्तित्व एवं दर्शन की चेतना का विकास मानव ने अपने जीवन के शुरुआती परिवेश में अन्य जीव जंतुओं के जीवनयापन के आधार पर ही सुनिश्चित किया। अस्तित्ववादियों का मानना है कि मनुष्य शुरुआती दौर में मांसाहार की संस्कृति पर पूर्ण रूप से जीवित था किंतु उसके आसपास की घटित होती घटनाओं ने मनुष्य को उसके आसपास के वातावरण एवं प्रकृति से परिचित होने पर विवश कर दिया जिसके परिणामस्वरुप मनुष्य ने शिकार कालीन सभ्यता में ही शाकाहारी जीवन की संस्कृति को कंदमूल के रूप में अपने खाने की संस्कृति में स्वीकार लिया। जिसके उपरांत उसमें तार्किक विवेचना पैदा हुई, जिसके परिणाम स्वरूप उसने यह व्यवहारिक अनुभव करने का प्रयास किया कि जीव जंतु का शिकार कर ना केवल उसके समुदाय का संरक्षण हो रहा था, बल्कि प्राकृतिक मौसमी मार से बचने के लिए उसने जानवरों की खाल, उसकी कपाल का उपयोग करना शुरू कर दिया। साथ ही शाकाहारी जीवन संस्कृति में उसने आसानी से भरण पोषण की संस्कृति

<sup>\*\*</sup>सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय मंगलौर, हरिद्वार, उत्तराखंड।





# भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा कर एक विश्लेषण

GOODS AND SERVICE TAX IN INDIAN ECONOMY
AN ANALYSIS

मुख्य संपादक डॉ. देवपाल

सह-संपादक

डॉ. किरन शर्मा

डॉ. श्वेता

डॉ. अनुराग शर्मा

Chaman Lal Mahavidhyalaya



# ISBN: 978-93-91018-11-5 © संपादक



Cheman Lal Mahavidhyalaya Hardwar Uttarakhano Principal

प्रकाशक

नालदा प्रकाशन नई दिल्ली

(2): +91-9968082809,+9315194807

: nalandaaprakashan@gnail.com

प्रथम संस्करण- 2022 टीपिका शर्मा, दिल्नी-94 अक्षर संयोजक

ट्राईडॅट इटग्राइजेज, दिल्ली-32

प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनकत्यादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता। एवं रिकॉर्डिंग संदित इलेक्ट्रानिक अथवा पशीनी, किसी के माध्यप से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन्प्रयोग की इस पुस्तक के सर्वाधिकार भूरक्षित है। संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकांधी

Bhartiye Arthavyevastha Mei Vastu Evam Seva Kar Dr. Devpal, Dr. Kıran Sharma, Dr. Sweta, Dr. Anurag Sharma

# भूमिका

जिससे भारत एक आर्थिक संघ बनने की ओर अग्रसर हो सके। अप्रत्यक्ष कर की एक सामंजस्यपूर्ण प्रणाली के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया है मिश्रण थी। जी.एस.टी. के तहत एक से अधिक करों को समाहित करके से पहले, भारतीय कराधान प्रणाली केंद्र राज्य और स्थानीय क्षेत्र के करों का वस्तु एवं सेवा कर/गुड्स एंड सर्विस टैक्स (जी.एस.टी.) के लागू होने

बदलने की सिफारिश की। पर मूल्य वर्धित कर के साथ सीमा शुल्क को छोड़कर सभी अप्रत्यक्ष करों को सेवा कर (जी.एस.टी.) की सिफारिश की। इसने सभी वस्तुओं और सेवाओं व्यापक कर शुरू करके मौजूदा कर व्यवस्था को बदलने के लिए माल और पर एक कार्यबल का गठन किया जिसने 2004 में केंद्रीय स्तर के बैट और राज्य स्तर के विभिन्न वैट्स की जगह सभी वस्तुओं और सेवाओं पर एक वर्ष 2003 में केंद्र सरकार ने राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन

कर शक्तियों के लिए प्रदान नहीं किया और संविधान के माल और सेवा कर चाहिए। सविधा 🌑 नी योजना ने संघ के साथ-साथ राज्यों को किसी भी समवर्ती लगा सकता है लेकिन राज्य ऐसा नहीं कर सकते। एक एकीकृत वस्तु और और सेवाओं दोनों की पूरी आपूर्ति शृंखला पर कर लगाने की शक्ति होनी सेवा कर योजना के तहत दोनों के पास उत्पादन से वितरण तक और वस्तुओं लगाने की शक्ति है। संघ अवशिष्ट शक्तियों का उपयोग करके सेवाओं पर कर पर कर लगाने का अधिकार है, राज्यों के पास वितरण स्तर पर माल पर कर राज्यों को सौंपी गई है। जबकि केंद्र को उत्पादन या निर्माण चरण तक माल कराधान की शक्ति संविधान की अनुसूची VII के तहत विषय-वार संघ या



120 भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा कर

पुनर्गठन वस्तु एवं सेवा कर के लिए सॉफ्टवेयर बनाने में अवसर प्रदान करना इत्यादि वस्तु एवं सेवा कर ने भारतीय बैंकिंग क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। होटलों, पर्यटक स्थलों से प्राप्त आय अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख हिरसा होती है। यह जी.डी.पी. को बढ़ाने में मदद करता है। वस्तु एवं सेवा कर ने अनेक करदाता ओ भी प्रभावित किया है। जी.एस.टी. के कारण आयात और नियात दोनों प्रभावित हुए हैं।

#### निष्कर्ष

निःसंदेह वस्तु एवं सेवा कर भारतीय अर्थ जगत को प्रभावित किया है। अकेले वस्तु एवं सेवा कर के लागू होने से भारत में प्रचलित अनेक कर समाप्त हो गए या उनके स्वरूप बदल गए। भारत में दोहरे कराधान और कर के ऊपर करों को रोकने के लिए लावा गया है। वस्तु एवं सेवा कर उपभोक्ताओं बारा जो खाया जाने वाला अप्रत्यक्ष कर है जो उत्पादन पर न लगा के उपभोग पर लगता है आज वस्तु एवं सेवा कर का लाभ सभी क्षेत्रों के लोग उठा रहे हैं यह एक साझा राष्ट्रीय बाजार का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हुआ है कराधान को सुव्यवस्थित करने कर अनुपालन में वृद्धि कर चोरी को हतोत्साहित करने अनिश्चितता लाने भ्रष्टाचार में कमी करने तथा माध्यमिक शेत्र को बढ़ावा देने में वस्तु एवं सेवा कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वस्तु एवं सेवा कर सकल यरेलू उत्पाद में वृद्धि करने में सहायक है। वस्तु एवं सेवा कर के कारण वास्तविक रूप में भारत का आर्थिक विकास होगा।

वस्तु एवं सेवा कर का संवैधानिक महत्व का नेता से करते हैं-

#### संदर्भ सूची

- 1- https://hr-quora-com/:EO:A4:
- 2- https://hi-quora-com/GST-EO:
- 3- https://leading.file-com/hi/.EO:
- 4- https://cbic-gst-gov-in/pdf/faq.
- 5. दैनिक जागरण अलीगढ़ 1 जुलाई 2017 पृष्ठ संख्या 11
- 6. सिंह सुनील कुमार. लूसेंट पब्लिकेशन पटना वर्ष 2018 पृष्ठ संख्या 140

15.

#### प्राचीन इतिहास में कर व्यवस्था का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. सूर्यकांत शर्मा\*

प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था को एक प्रगतिशील अर्थव्यवस्था मानी जाती है। नियमित कर व्यवस्था एक पूर्ण विकसित कृषि प्रधान समाज का ही लक्षण है। प्राचीन भारत में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों कर प्रचलित थे। प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष करों के मिश्रण से ही कर व्यवस्था में लचीलापन आया यद्यपि अधिक बल प्रत्यक्ष करो पर ही दिया गया था।

मनुष्य जाति के इतिहास में बहुत बाद में चलकर शासन ने राजस्य वृद्धि के लिए करों का आश्रय लिया था, विशेषकर ऐसे करों का जो उचित रूप से लगाए जाते थे और जिनके सम्बंध में शासित जनों की सहमित ले ली जाती थी। शताब्दियों तक सार्वजनिक क्षेत्रों से ही मुख्य रूप से राजस्य का संकलन किया जाता था जिसमें घरेलू उपभोग की वस्तुओं पर लगाए गए उत्पादन शुल्क और विदेशी व्यापार पर लगाए गए सीमाशुल्क का स्थान मुख्य था।

and of the state o

<sup>\*</sup>सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंडीरा, हरिद्वार उस्त्राहरू

# and Water Education and Research

#### **Editors**

Dr. Deepika Saini Dr. Bhavtosh Sharma Prof. (Dr.) Anita Rawat Dr. Sanjeev Kumar

Chaman Lal Mahavidhyalayat Landhaura, Disti -Haridwar Uttarakhano



ABS BOOKS
Delhi-110086



Dain

## 1.

# Analytical Microbic Methods for the Asthe Water Quality

Saif Ali\*
Bhavtosh Sharma\*\*
Anita Rawat\*\*
Deepika Saini\*\*\*

#### Introduction

he huge diversity among all li our planet is microbes. They are distribution on our planet is line extreme temperatures, acidic and alka 2006) but few species of microorganism harsh environment also. It is supposed microorganism is limited to top of the surrenvironment (Alexander, 1971). Today underground and top surface area of planas well as microbial community is spread.

on neir ors, dry, the n of phere entire crobes

Research

ind.

<sup>\*</sup>Shri Guru Ram Rai University (SGRRU), Dehrad

<sup>\*\*</sup>Water Quality Analysis Laboratory, Uttarakhan Centre (USERC), Dehradun, Uttarakhand.

<sup>\*\*\*</sup>Department of Zoology, Chaman Lal (PG) Col

# Recent Advances in Soil and Water Education and Research

### Editors

Dr. Deepika Saini Dr. Bhavtosh Sharma Prof. (Dr.) Anita Rawat Dr. Sanjeev Kumar

Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura Disti Handwar Uttarakhano



S

6-

ABS BOOKS
Delhi-110086

## Biodiversity and Environmental Governance in India: Safeguarding Ecosystem for Human Welfare

Editor Dr. Aprana Sharma Co-Editor

Dr. Vidhi Tyagi



The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this book. The publishers and editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

#### Title

Biodiversity and Environmental Governance in India : Safeguarding Ecosystem for Human Welfare

Editor: Dr. Aprana Sharma Co-editor: Dr. Vidhi Tyagi

Published By: Self Publication

Printing House: Meerut Security Press, Mohakampur, Meerut

Edition Detail: First Edition

ISBN: 978-93-5701-239-3

Price: ₹ 1000/-© Reserve

First Edition: 2022

All rights reserved

No part of this book may be reproduced in any form of print & electronic means without the written permission of the publishers.

the

at the

intr

hav ado

ma dec res

the

Na Ga

ve

the

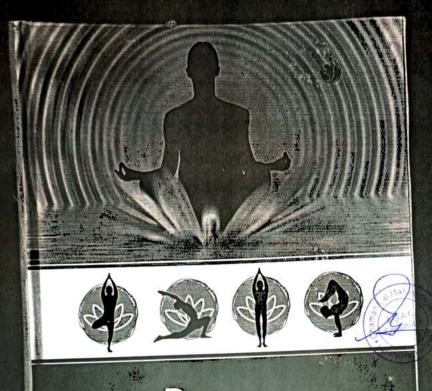
### नागरिकता संशोधन अधिनियम एवं राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर: भविष्य के भारत का संवैधानिक दर्पण

डॉ. तीर्थ प्रकाश\* डॉ. नीशू कुमार\*\*

प्राचीन सभ्यताओं की जीवन शैलियों में से एक के रूप में भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना को स्वीकार किया जाता रहा है। ऐतिहासिक तौर पर अनेक आकांक्षी व आक्रमणकारी समूह भारत में आते रहे हैं और यहाँ की धार्मिक सहिष्णुता की सनातनी परम्परा उन्हें अपने में समाहित करती रही है। अनेकता में एकता और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना ने हजारों-हजार वर्ष के इतिहास को भारतीय भूमि ने अपने आगोश में समेटा है। सभ्य एवं शान्ति की सांस्कृतिक यात्रा के रूप में जीवन के उच्च आदर्श मूल्यों के साध, हम एक प्राचीन राष्ट्र के रूप में स्थापित एवं विकसित हुए है। उपनिवेशिक शासन के दौरान हमने शासन का सबसे निकृष्ट एवं उच्चतम स्तर का शोषण झेला है जिससे प्रेरणा पाकर हमारी राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ और

Chaman Lal Mahavidhyalaya
Lal Mahavidhyalaya
Landhaura. Distt. Haridwar Ulffarakhan.

<sup>\*</sup>सह आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय मंगलीर हरिद्वार। 'हायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चमनलाल महाविद्यालय लण्ढीरा, हरिद्वार।



# स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में

डॉ. अंकित कुमार

डॉ. नीशू कुमार

## योग : एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में

#### संपादक

डॉ. अंकित कुमार सहायक आचार्य योग विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड

डॉ. नीशू कुमार सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड

Chaman Lai Mahavidhyalaya Landhaura Distri Hambara Ultarakhand



नालंदा प्रकाशन



157

ISBN: 978-93-91018-40-5

© संपादक



प्रकाशक नालंदा प्रकाशन

नई दिल्ली

① : +91-9968082809,+9315194807

🛚 : nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2023

अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुदक

शांति इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Yog: Ek Behtar Swasthya ke Vikalp Ke Roop Mei

by: Dr. Ankit Kumar & Dr. Nishu Kumar

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaira, Disti Hardhar Lilocoldana 1.

### समग्र स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव : एक अवलोकन

डॉ. नीशू कुमार\*

#### प्रस्तावना

योग विद्या ऋषि-मुनियों की खोज है। यह भारत की प्राचीनतम विद्या है। योग विद्या का स्थान युगों पूर्व शीर्ष पर था, आज भी शीर्ष पर ही है और आने वाले समय में भी रहेगा इसमें किसी को भी थोड़ा भी संदेह नहीं होना चाहिए। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथों में योग का वर्णन मिलता है। योग का मुख्य उद्देश्य हमारे जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। अर्थात् शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक पक्षों को दृढ़ करने से है। इस उद्देश्य को तब पूरा किया जा सकता है जब मानव का स्वास्थ्य निरोगी हो, जो शरीर सभी विद्याओं तथा शुभ गुणों का आधार है। जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करने का मुख्य साधन है- स्वस्थ जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक योग मात्र साधन है। यदि हम स्वस्थ नहीं हैं तो हम किसी भी क्षेत्र में

<sup>\*</sup>सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढीरा, हरिद्वार, उत्तराखंद।

## जनसंख्या वृद्धि: विमर्श के आईने में

संपादक

डॉ. नीशू कुमार नवीन कुमार







नालंदा प्रकाशन

दिल्ली



ISBN: 978-93-91018-34-4

© संपादक



#### प्रकाशक नालंदा प्रकाशन

नई दिल्ली

1: +91-9968082809,+9315194807

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2023

Principal अक्षर संयोजक Chaman Lal Mahavidhyalayaद्वीपिका शर्मा, दिल्ली-94 Landhaura, Disti-Haridwar Ultarakhand मुदक

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32



इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सिंहत इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनुप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संघारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Jansankhiya Vradhi: Vimarsh Ke Aaine Mei

by: Dr. Nishu Kumar& Naveen Kumar

the

B Population

Growth in India

Problems and Challenges

Dr. Nishu Kumar Dr. Vimal Kant



Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya



# Population Growth in India:

## Problems and Challenges

#### Edited by

#### Dr. Nishu Kumar

Assistant Professor Department of Political Science Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura, Haridwar Uttarakhand

#### Dr. Vimal Kant

Assistant Professor Department of Economics Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura, Haridwar Uttarakhand



ABS Books

ashet



The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagnatism, if any, in this book is entirely that of the author(s). Neither the publisher nor the editors will be responsible for them whatever.

ISBN: 978-93-94424-10-4

Copyright : Editors

Edition

q.

2022



Published by

#### **ABS Books**

Publisher and Exporter

B-21, Ved and Shiv Colony, Budh Vihar Phase-2, Delhi - 110086

1:+919999868875,+919999862475

: absbooksindia@gmail.com Website: www.absbooksindia.com

#### PRINTED AT

Trident Enterprises, Noida (UP)

#### **Overseas Branches**

#### ABS Books

Publisher and Exporter

Yucai Garden, Yuhua Yuxiu Community, Chenggong District, Kunming City, Yunnan Province -650500 China

#### ABS Books

kyrgyzstan

Publisher and Exporter

Microregion Alamedin-1 59-10 Bishek, Kyrgyz Republic- 720083



All right reserved. No. Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, transmitted or utilized in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner translator. Application for such permission should be addressed to the Publisher and translator. Please do not participate in or do not encourage piracy of copyrighted materials in violation of the author's rights. Purchase only authorized editions.

Population Growth in India: Problems and Challenges

By: Dr. Nishu Kumar & Dr. Vimal Kant

Dehod

### 1.

### Impact of Population on Indian Economic Development

Dr. Devpal\*
Dr. Nishu Kumar\*\*

#### Introduction

here exists a nearby and complementary connection between population development and monetary improvement in a country. Population is a source of labor in a way that can be used to boost the production of a country. On the other hand, it can also be seen as a consumer group that uses and exhausts a large amount of the country's resources. However, some economists of earlier times have pointed out that population growth and

<sup>&</sup>quot;Assistant Professor, Department of Political Science, Chaman Lal Mahavidhyalya, Landhaura, Haridwar, Uttarakhand.



tell

<sup>\*</sup>Assistant Professor, Department of Commerce, Chaman Lal Mahavidhyalya, Landhaura, Haridwar, Uttarakhand.





Dr. Nishu Kumar

Education - M.A., M.Phil., UGC, Net, Ph.D.

Honor Award -

 Literature Award Saraswati Bhaskar Samman Haryana Sanskriti Academy Panchkula Haryana

 Young Faculty Excellence Award, Vivekananda College of Arts and Science for Women's Institute Trichungode Namakkal Tamil Nadu Innovation Council of Vikas.

Experience - 5 years

Coordinator/Organizing Secretary/Seminar and Workshop- 9

Books Published - 14

Research Projects - 3

Research Papers - 22

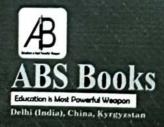
Mob./E-mail. 8126501692/ nishubhati1988@gmail.com



Dr. Vimal Kant was born on September 10,1989, in a rural area farmer family. He completed his education from the village school. He has obtained UGC NET (Economics) and completed his Ph.D. from Hamvati Nandan Bahuguna. Garhwal University, Srinagar (Uattrakhand) He is life time member of Indian Economics Association. He has

more than ten research/ Review paper and edited books.











# भारत में जनसंख्या वृद्धि

समस्या एवं चुनौतियाँ





# भारत में जनसंख्या वृद्धि : समस्या एवं चुनोतियाँ

संपादक

डॉ. नीशू कुमार

सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्डौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड ।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
andhaura. Distt -Haridwar Uttarakhano





नालंदा प्रकाशन दिल्ली

A. frof

ISBN: 978-93-91018-72-6

© संपादक



#### प्रकाशक

#### नालंदा प्रकाशन

C-5/189 यमुना विहार, दिल्ली-110053

T: +9968082809, 9315194807

🖂: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022

अक्षर सर्योजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

ट्राईडेंट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा झान के संग्रहण एवं पुर्नप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Bharat Mai Jansankhya Vardhi : Samshya Evam Chunotiya

by Dr. Nishu Kumar

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhano

23.

## भारत के आर्थिक विकास पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभावः एक विश्लेषण

डॉ. देवपाल\*

#### प्रस्तावना

जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास सहसंबद्ध कारक हैं, पिछले 30 वर्षों में दुनिया की जनसंख्या प्रति व्यक्ति आय, लोगों के जीवन स्तर और शहरीकरण के समान तरीके से दोगुनी हो गई है, और प्रौद्योगिकी की प्रगति भी उसी गति से बढ़ी है। किसी देश के आर्थिक विकास पर जनसंख्या का सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, यह पूरी तरह से देश पर आधारित है कि वे उस जनसंख्या को लाभप्रद या गैर-लाभकारी कारक के रूप में कैसे उपयोग करते हैं। पूरी दुनिया में चीन की आबादी सबसे ज्यादा है लेकिन इसकी आर्थिक विकास दर भी अच्छी तरह से संतुलित है क्योंकि वे मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या का उपयोग करते हैं जो उनके लिए वहुत उपयोगी हैभारत की

<sup>\*</sup>असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।



setof



### योग: एक बेहतर स्वास्थ्य के विकल्प के रूप में

Chaman Lai Mahavidhyalaya randhaura, Distr Handwor Uharakhana



संपादक

डॉ. अंकित कुमार सहायक आचार्य योग विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्डौरा विरुटार उत्तराखण्ड डॉ. नीशृ कुमार सडायक आचार्य राजनीति यिज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढीरा

and

ISBN: 978-93-91018-40-5

**©** संपादक



प्रकाशक नालंदा प्रकाशन नई दिल्ली

1 : +91-9968082809,+9315194807

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2023 अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुदक

शांति इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार मुर्गक्षत है। संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकोपी व्य रिकार्डिंग महित इतेक्ट्रॉनिक अथवा पशीनी, किसी के माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाती द्वार, किसी भी रूप में, पुनरुसादित अथवा संवादित- प्रसादित नहीं किया जा सकता।

Yog : Ek Behtar Swasthya ke Vikalp Ke Roop Mei

by Dr. Ankit Kumar & Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lai Mahavidhyalaya
Landhaura, Disit -Handwar Uttarakhann



and f

# भारत में योग पर्यटन : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ

डॉ. देवपाल

#### प्रस्तावना

योग को पृथ्वी पर मानव जाति जितना पुराना कहा जाता है, इस दावे का समर्थन करने के लिए कोई भौतिक प्रमाण नहीं है लेकिन मोहनजोदड़ो और हड़प्पा शहरों के खंडहरों में, उत्खननकर्ताओं को साबुन के पत्थर की मुहरों पर उकेरे गए चित्रण मिले जो दृढ़ता से योगी जैसी आकृतियों से मिलने जुलते थे। ये आंकड़े साबित करते हैं कि इसकी उत्पत्ति 5,000 या उससे अधिक साल पहले भारत में हुई थी। दरअसल, योग का जन्म भारत में हुआ हैं। इसका जन्म वैदिक काल से आधुनिक युग तक पूर्व-शास्त्रीय योग काल, शास्त्रीय काल, उत्तर-शास्त्रीय योग काल के माध्यम से होता है। इन चरणों के दौरान, योग कई चरणों से गुजरा जिससे इसे अधिक से अधिक बढ़ने में मदद मिनी। योग एक विज्ञान है जिसका अभ्यास हजारों वर्षों से किया जा रहा है। पहले योग केवल योगियों का था लेकिन आधुनिक युग में यह सभी के लिए

<sup>\*</sup>अप्तिम्टेंट प्रोफंसर, वाणिञ्च विभाग, रामन लाल मन्नाविद्यालय, लंढोरा, हरिद्वार, प्रम्य





# अविर्धि विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकता

**ड**ॉ. नीशू कुमार



32Az

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya

D'att Daridina Illand ban

Jesho &



# आचार्य विनोबा भावे के दर्शन की आधुनिक भारतीय समाज में प्रासंगिकता

संपादक

डॉ. जीशू कुमार सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Distt -Haridwar Uttarakhano





नालंदा प्रकाशन दिल्ली

terfet

ISBN: 978-93-91018-66-5

ः संपादक



प्रकाशक

नालंदा प्रकाशन

नई दिखनी

(D): +91-9968082809,+9315194807 : nalandaaprakashan@gmail.com

> प्रथम संस्करण 2022 अक्षर संयोजक

दीपिका शर्मा, दिल्ली-94

मुदक ट्राइंडॅट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

इस पुस्तक के सर्वाधिकार मुरक्षित है। संपादक की निश्चित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकांपी एवं रिकार्डिंग सहित इनेक्ट्रानिक अथवा मशीनी, किसी के मध्यम से, अबवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनुप्रयोग की प्रणानी द्वारा, किसी भी रूप में, पुनकतादित अथवा संवासित- प्रसारित नहीं किया जा सकता।

Aachariya Vinoba Bhave ke Darshan ki Aadhunik Bhartiye Samaj Mel Prasangikta

by Dr. Nishu Kumar

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura, Disti -Haridwar Uttarakhand

to the g

14.

## गाँधी जी के बाद सर्वोदय आंदोलन में आचार्य विनोबा भावे की भूमिका

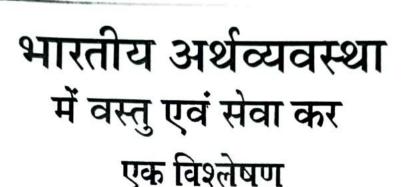
डॉ. देवपाल

#### प्रस्तावना

सामाजिक परिवर्तन के लिए समाज में किसी भी सामाजिक-आर्थिक बुराइयों को दूर करने के लिए दुनिया के किसी भी विकासशील राष्ट्र का अंतिम लक्ष्य 'सभी का कल्याण' है। सर्वोदय का दर्शन भारतीय समस्याओं के लिए गांधीचादी गमवाण था। 20वीं शताब्दी में सर्वोदय का राजनीतिक दर्शन गाँधी जी के राजनीतिक चिंतन में एक महत्वपूर्ण जोड़ था। हम यह कभी नहीं कहते कि गांधी जी दुनिया पर सर्वोदय विचारधारा के पहले निर्माता थे। उनसे पहले, दाँग्या के कई देशों या क्षेत्रों में सर्वोदय का अनुसरण किया जाता था। लेकिन आधुनिक इतिहास में हमें सर्वोदय के लिए या सभी की भलाई के लिए महान्माजी की व्यावहारिक भूमिका को याद रखना चाहिए।

असिम्बर अध्यस्य वर्णणच्य विभाग, चमन लाल महाविद्यालय, लंढीरा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।





GOODS AND SERVICE TAX IN INDIAN ECONOMY

AN ANALYSIS

मुख्य संपादक डॉ. देवपाल

सह-संपादकु

डॉ. किरन शर्मा

डॉ. श्वेता

डॉ. अनुराग शर्मा

Chaman Lat M. Landhaura Disti-H.L.



# भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तु एवं सेवा कर GOODS AND SERVICE TAX IN INDIAN ECONOMY AN ANALYSIS

**मुख्य संपादक** डॉ. देवपाल

सह-संपादक डॉ. किरन शर्मा डॉ. श्वेता डॉ. अनुराग शर्मा

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Dien Handwar Ulisirakhann







ISBN: 978-93-91018-11-5

© संपादक



प्रकाशक नालंदा प्रकाशन <sup>नई दिल्ली</sup>

①: +91-9968082809,+9315194807

: nalandaaprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण- 2022 अक्षर संयोजक दीपिका शर्मा, दिल्ली-94 मुदक ट्राईडॉट इटरप्राइजेज, दिल्ली-32

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura, Distt-Handwar Uttarakhano



E-3 + 33



वाषिक गविक

# ECOSYSTEM AND ENVIRONMENTAL POLLUTION

Editors

Dr. Avnish Chauhan NET, PhD., IAES (Gold Medalist) Associate Professor Department of Environmental Science Graphic Era Hill University Dehradun (Uttarakhand) (India)

> Lt. (Dr.) Shivom Singh Associate Professor ITM University Gwalior Madhya Pradesh (India)

Dr. Kamal Chandra Semwal

Associate Professor
Department of Biology
College of Sciences
Eritrea Institute of Technology (EIT)
Asmara, Eritrea (East Africa)

Dr. Prabhat Kumar Singh Assistant Professor Department of Microbiology Chaman Lal (PG) Mahavidyalya Haridwar (Uttarakhand) (India)





DISCOVERY PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.
INDIA





Pages: 182-198

Ecosystem and Environmental Pollution

Editors: Dr. Avnish Chauhan; Kamal Chandra Semwal

Lt. (Dr.) Shivom Singh; Dr. Prabhat Kumar Singh

ISBN: 978-93-88854-97-9

Published by: Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi (India)



#### Biodiversity and Conservation of Medicinal Plants in Shivalik Range of Haridwar, Uttarakhand

Munish Sharma<sup>1</sup>; Prabhat<sup>2</sup>; Navneet<sup>3</sup> and Munit Sharma<sup>3</sup>

#### ABSTRACT

Uttarakhand boasts an abundance of natural resources as well as a richness of traditional medical knowledge that has been used by locals from time immemorial. Ethnomedicinal research is employed in primary health care to help people get better. Since the Vedic era, medicinal plants have played an important role in the lives of people living in the Himalayas, providing goods for both food and medicine. Their basic healthcare system is based primarily on traditional medicinal herb knowledge due to the presence of chemical ingredients plants have their own medicinal characteristics. Secondary metabolites identified in medicinal plants can be used to treat a wide range of diseases and disorders. Many plants possess anti-oxidant, anti-inflammatory, anti-depressant, immune booster, memory enhancers, and antiviral properties, and are commonly used by local and tribal people all over the world. As per available literature, a total of almost sixty-five medicinal plants are used in Haridwar and other parts of Uttarakhand. However, adequate identification, documenting, surveying, and herbal preparation of plant species are required to conserve this indigenous knowledge on traditional medicines. This chapter primarily focused on

Haridwar - 249404, Uttarakhand

Corresponding author Email: rs.munitsharma@gkv.ac.in

Dimile

<sup>&</sup>lt;sup>1</sup>Department of Plant sciences, Central University of Himachal Pradesh, Shahpur - 176206, Kangra, Himachal Pradesh

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup>Department of Microbiology, Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura - 247664 Uttarakhand

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup>Department of Botany and Microbiology, Gurukula Kangri (Deemed to be University)





### Assessment of Carbendazim toxicity on catfish for the establishment of stress biomarker

Avnish Chauhan\*, Vishal Rajput¹, Prabhat² and Sonu Dwivedi³

3478

\*Department of Environmental Science, Graphic Era Hill University, Dehradun, Uttarakhand, India. <sup>1</sup>Himalayan School of Biosciences, Shri Rama Himalayan University, Dehradun, Uttarakhand, India.

<sup>2</sup>Department of Microbiology, C.L.M.Rorkee, Haridwar, Uttarakhand, India

<sup>3</sup>Department of Chemistry, D.B.S. (PG) College, Dehradun, Uttarakhand, India.

\*Corresponding Author Email: avnishchauhan\_in@yahoo.com

#### ABSTRACT

Fish are very susceptible to various water toxicants and can build up in the body these toxicants (biomagnification). Fungicides results various environmental issues ultimately adversely affect and ered the structure and various functioning of ecosystem. Carbendazim has a long range of application m agriculture as fungicide, which finally leads its accumulation in animal tissues. Attempt has been made to check and analyze the effect of Carbendazim on protein and carbohydrate content at 24th, 48th, 72th and 96th hr of exposure on walking catfish (Clarias batrachus). Carbendazim was reported to be moderately toxic to walking catfish Clarias batrachus and induced alterations in the gills and muscles. Further noticeable metabolic reduction was reported as biochemical constituents like carbohydrates and protein exhibit negative linear changes. The occurrence of carbohydrate and protein alterations may be used as potential biomarker for fungicide toxicity in fresh water ecosystem.

Keywords: The Ganga River, fungicide, toxicity, freshwater walking catfish, protein, gills, muscles etc.

Number: 10.14704/nq.2022.20.7.NQ33428

Neuro Quantology 2022; 20(7):3478-3486

#### Introduction

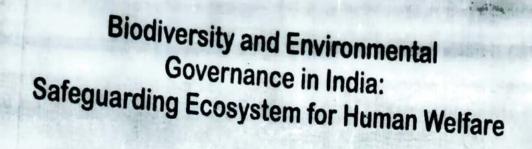
Fish are very susceptible to a large range of water toxicants; different fish species show a large number of pollutants or toxicants in the fish (Herger et al., 1995).

mber of workers have been reporting erations in biochemical content of different fish tissues due to the toxic effects of various heavy metals and pesticides (Gupta et al., 1987; Khan et al., 1992; James and Sampath, 1995; Das et al., 1999; Khare and Singh, 2002; Sobha et al., 2007; Hadi et al., 2009, Ganeshwade, 2012).Fish can be a useful water quality indicator and is directly related to human health in many parts of the world. Fish can be a useful water quality indicator and is directly related to human health in many parts of the world. Fish are sentinels for water pollution and can be of great importance to human health (Zhou et al., 2021).

Fungicides are widely used in the control of the spread of several pests to increase agricultural output. On other hand, use of fungicides results various environmental issues ultimately adversely affect the structure and functioning of ecosystem (Ganeshwade, 2011). Fungicides, mixed in aquatic system through runoff, as applied during spray on crops. Fungicides show a range of toxicity (moderate to high toxicity) on aquatic organisms, which ultimately affects the biochemical balance of fishes (Cough, 1975). Fish are vulnerable to aquatic toxicants as they remain in direct contact with surroundings. The zest of such environmental issue, lies in the fact that fungicides accumulate in environment but also deposits in the various tissues of the fish. Such deposition may results in the form of alterations at various aspects of organism. Carbendazim has a long range of application in agriculture, which leads its accumulation in animal tissues and presence of Carbendazim also influence the phsico-chemical aspects of surrounding waters as well as the



896



Editor Dr. Aprana Sharma

> Co-Editor Dr. Vidhi Tyagi

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this boo publishers and editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if a purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the edi publishers to avoid discrepancies in future.

#### Title

Biodiversity and Environmental Governance in India : Safeguarding Ecosystem for Human Welfare

Editor : Dr. Aprana Sharma Co-editor : Dr. Vidhi Tvagi

Published By a Self Publication

Printing House: Meetat Security Press, Mohakampur, Meetat

Edition Detail: First Edition

ISBN: 978-93-5701-239-3

Price : ₹ 1000 -• Reserve

First Edition: 2022

All rights reserved

32/2

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhaura Distt Handwar Uharakhana

No part of this book may be reproduced in any form of print & electronic means without the permission of the publishers.

A





#### 16. SUSTAINABLE PACKAGING: A GATE WAY TO SAFE ENVIRONMENT

Dr. Shweta, Assistant Professor

Department of Commerce Chamar, Lai Mahavidhyalya, Landhaura, Haridwar Distt

"Regardless of what you need to package or ship, there is some eco-friendly option available that can meet your needs."

#### Introduction

Sustainability-mainly regulatory and public concerns around single-use wrapping waste are combining with other influential trends to force major changes in customer wrapping. Regulators are touching on the issue, and Fast-Moving Consumer Goods (FMCG) companies and retailers are proactively manufacture bold commitments to recover both the sustainability of their packaging and to essentially rethink their packaging systems. In another words Sustainability is about more than just using recycled materials. True sustainability is fretful with promoting a bigger use of life-cycle inventory and life-cycle assessment as a way to reduce the environmental impact of the ecological footprint of the packaging that you choose. It also involves the complete life cycle of the materials, from sourcing to recycling.

Packaging is an integral part of our daily lives. It affects things that we need to survive. But for brands, this gets bigger. Packaging has the potential to evoke a spectrum of feelings in consumers. These could range from concerns about authenticity, origin, durability, and more. All of these help them develop a lasting memory of your brand. Ever since the e-commerce triggered boom, shoppers are growing innately conscious of the brands they patronize and their impact on the environment. Report by Nielsen 2020. Today of over 300 million tons of plastic waste generated, only 9% has been recycled to date. Plastic packaging alone comprises half the plastic waste generated globally, with only about 16%— less than one-fifth, being reprocessed and recycled. Amidst the current global crisis, for brands making changes at a micro level, shifting to sustainable packaging, can have a macro impact.

With over 78% of consumers in the US nore likely to purchase a product clearly labeled "environmentally friendly." packaging plays as important a role as the product itself. Sustainable packaging reduces packaging material and minimizes waste and environmental impact. Moreover, the profitable advantages and appeal it poses to firms and consumers are fast gaining traction.





वार्षिक पत्रिका : 2021-22 (वि.स. 2078-79)

चमन लाल महाविद्यालय, लंढीरा जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

# चमन संदेश

Encl. NO-02

तर्इ शिक्षा नीति विशेषांक

मुख्य संरक्षक श्री ईश्वर चन्द शर्मा, संस्थापक (चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार) श्री राम कुमार शर्मा, अध्यक्ष, प्रबंध समिति

संरक्षक

श्री अरुण कुमार हरित, सचिव, प्रबन्ध समिति श्री अतुल हरित, कोषाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

> प्रधान संपादक डॉ. सुशील उपाध्याय, प्राचार्य

मुख्य संपादक डॉ. तरुण कुमार गुप्ता (सहायक आचार्य, गणित विभाग)

संपादक मंडल श्री आशुतोष शर्मा (सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग) डॉ. नीतू गुप्ता (सहायक आचार्या, गृह विज्ञान विभाग) डॉ. अनिता रानी (सहायक आचार्या, संस्कृत विभाग)

प्रकाशक प्राचार्य, चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा (हरिद्वार)

हिलामी अंक के लिए आपके सुझाव हेतु Email:editorclm@gmail.com Ph.: 9997998050, 9917489599

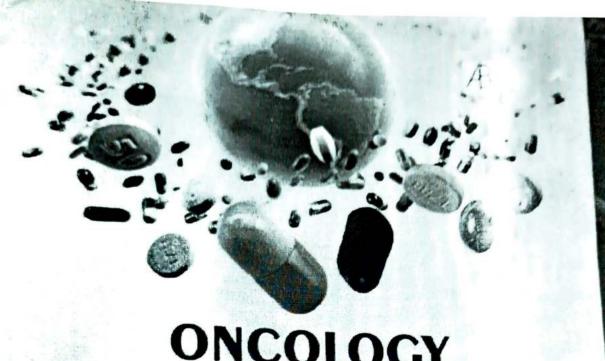
ISBN: 978-93-93355-50-8

मुद्रक समय साक्ष्य, 15 फालतू लाईन देहरादून—248001

फोन: 0135-2658894

Chaman Lai Mahavidhyalaya

al Marian Para Commator Para



# ONCOLOGY IN GLOBAL WORLD

It's Advance and Research

Vipin Kesharwani Sagarika Kabra Deepika Saini







398

Current Issue in
Intellectual Property Rights
with Special Focus on Patent
and Copyright Law

COPYRIGHT

PATENT

TRADEMARK

PROFESTY

Deepika Saini Devpal Anurag Sharma Shahid Sami Siddique



3 2/2

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya ptf



# Current Issue in Intellectual Property Rights with Special Focus on Patent and Copyright Law

#### Editors

#### Dr. Deepika Saini

Assistant Professor Department of Zoology Chaman Lal Mahavidyalaya Landhora, Haridwar, Uttarakhand

#### Dr. Anurag Sharma

Assistant Professor Department of Commerce Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhora, Haridwar, Uttarakhand

#### Dr. Devpal

Assistant Professor
Department of Commerce
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Landhora, Haridwar, Uttarakhand

#### Dr. Shahid Sami Siddique

Assistant Professor Department of Zoology Govt. P.G College, Rudrapur Uttarakhand

Principal
Chaman Lal Mahavidhyalaya
Loodhaira Dicit Handwar Uttarakhano



ABS BOOKS

Long (Handward)



The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author(s). Neither the publisher nor the editors will be responsible for them whatever.

ISBN

Copyright: Edited Edition 2023



Published by

#### ABS Books

Publisher and Exporter B-21, Ved and Shiv Colony, Budh Vihar Phase-2, Delhi - 110086

D: +919999868875, +919999862475

: absbooksindia@gmail.com Website: www.absbooksindia.com

#### PRINTED AT

Trident Enterprise, Noida (UP)

#### : 978-93-94424-42-5 | Overseas Branches

#### ABS Books

Publisher and Exporter

Yucai Garden, Yuhua Yuxiu Community, Chenggong District, Kunming City. Yunnan Province -650500 China

#### ABS Books

Publisher and Exporter

Microregion Alamedin-1 59-10 Bishek, Kyrgyz Republic- 720083 kyrgyzstan

All right reserved. No. Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, transmitted or utilized in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying. recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner Author/Editors. Application for such permission should be addressed to the Publisher and Author/ Editors. Please do not participate in or do not encourage piracy of copyrighted materials in violation of the author's rights. Purchase only authorized editions.

#### Current Issue in Intellectual Property Rights with Special Focus on Patent and Copyright Law

By: Dr. Deepika Saini, Dr. Devpal, Dr. Anurag Sharma, Dr. Shahid Sami Siddique

aura (Has

-Princ<del>ip</del>al Chaman Lal Mahavidhyalaya Landhaura, Distt-Haridwar Uttarakhano

#### 2.

# Influence of Intellectual Property Rights on Economic Development in India

Dr. Devpal\* Vipin Kumar\*\*

#### Introduction

Intellectual property being intangible in form, is not susceptible to possession and custody, hence conventional laws of property are not sufficient to protect the rights of its creator. The creators of intellectual property need special kind of law that guarantees sufficient protection to their creations. Such law is known as "intellectual property law". Intellectual property law confers on the original creator of intellectual property exclusive rights enabling him to commercially exploit his creation for a fixed period. The intellectual property so created, in turn promotes general economic growth and development.

1 NA.C. 1 NA.C

<sup>\*</sup>Assistant Professor, Chaman Lal Mahavidhayalya, Landhaura, (Haridwar), Uttrakhand.

<sup>\*\*</sup>Research Scholar, O.P.J.S. University, Chru, Rajasthan.



ISBN No : 978-93-5701-239-3

11

¢

r

#### 17. BIODIVERSITY: POPULATION GROWTH AND HEALTH

Dr. Neetu Gupta

Assistant Professor, Deptt. of Home-Science, CLM, Landhaura, Haridwar

Many people do no longer reflect on consideration on the damage they may be inflicting on biodiversity. However, it's miles crucial as humans to comprehend the impact we've on biodiversity due to the fact without it, there could be no human existence. If no changes are made in the ways human beings use assets on this planet, there'll continue to be a degradation of biodiversity until human lives can now not be sustained. Humans affect biodiversity via their populace numbers, use of land, and their lifestyles, inflicting harm to habitats for species It is essential for human beings to recognize how their moves have an effect on biodiversity and the importance of keeping what biodiversity is left on earth Through right training, and through traumatic that governments make selections to hold biodiversity, the human population will be able to maintain lifestyles on this planet longer Overpopulation is associated with negative environmental and economic outcomes ranging from the impacts of over-farming, deforestation, and water pollution to global warming, While a lot of positive steps are being taken to better ensure the sustainability of humans on our planet, the problem of having too many people has made lasting solutions more challenging to find.

The term overpopulation is used to describe a situation in which the world or area has a population so large that the people there are suffering as a result. In other words, the population exceeds the region or planet's carrying capacity-the number of people, other living organisms, or crops that can be supported without environmental degradation. Their suffering may include a shortage of food. limited access to healthcare and other public services, overcrowding, and high unemployment. Human sports are worrying each the structure and functions of ecosystems and changing native biodiversity. Such disturbances reduce the abundance of some organisms, reason population increase in others, modify the interactions amongst organisms, and adjust the interactions between organisms and their bodily and chemical environments. Patterns of infectious illnesses are sensitive to those disturbances. Major procedures affecting infectious disease reservoirs and transmission encompass, deforestation; land-use change; water control e.g. Via dam production, irrigation, uncontrolled urbanization or city sprawl: resistance to pesticide chemical compounds used to govern sure disease vectors; climate variability and alternate; migration and international tour and trade: and the unintentional or intentional human creation of pathogens.

Biodiversity presents numerous environment services which can be crucial to human well being at gift and inside the destiny. Climate is an imperative a part of environment

Chaman Lal Mahavidhyalaya

naman Lai Ivianaviumyato ya ugara. Disti -Haridwar Uttarakhangdiversity and Environmental Governance in India Saleguarding Ecosystem





3

4

जिक्द

# साहित्य में धर्म, दर्शन एवं विज्ञान

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलेक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकॉपी द्वारा अन्य किसी प्रकार पुन: प्रकाशन अथवा पुन: मुद्रण, लेखक प्रकाशक की पूर्व अनुमित के बिना नहीं किया जा सकता है।

ISBN : 978-93-93010-32-2

© : लखक

सम्पादकः : डॉ. रामप्रवेश सिह

मुल्य : ₹ 800/-

प्रथम संस्करण : सन् 2023

प्रकाशक : विलक्षणा एक सार्थक पहल समिनि

अजायब, रोहनक (हरियाणा)

शब्द-संयोजन : मनभावन प्रिन्टर्ज,

भिवानी-127021

Principal Chaman Lal Mahavidhyalaya

Landhaura, Distt-Handwar Uttarakhann

Sahitya Me Dharm, Darsan Evám Vigyan

Edited by Dr. Ramprawesh Singh



21. साहित्य

विज्ञान

के विशेष

ल्यात व

ন্ত্রাকার

राज्ञासार

पंचावत

शिक्षा अ

साहित्य

नई शिक्षा नीति विशेषांक



चामना संदेश





#### अनुक्रमणिका

- शुभकामना संदेश प्राचार्यीय
- सम्पादकीय

#### हिन्दी अनुभाग

क्रमांक विषय		लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2022 से शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन की संभावनाएँ	डॉ. देवपाल	5
2.	पुस्तकालय पर नई शिक्षा नीति का प्रभाव	डॉ. कुलदीप कुमार	12
3.	नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा पर दृष्टिकोण	डॉ. अनिता रानी (शर्मा)	21
4.	भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : अध्ययन	डॉ. शिखा जैन	25
5.	21वीं सदी में युवा भारत के सपनों के अनुकूल शिक्षा नीति का निर्माण	डॉ. मधु मेहरा	31
6.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 डिजिटल शिक्षा	विपिन कुमार	35
7.	नई शिक्षा नीति चुनौतियाँ और संभावनाएं शिक्षा एवं शिक्षा तकनीकी में परिवर्तन	शैली शुक्ला	48
8.	शिक्षा एवं शिक्षा तकनीकी में परिवर्तन	गौरव शर्मा	54
9.	स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा संबंधी विचार - एक अवलोकन (शोध पत्र)	डॉ. राजेश मौर्य, प्रो. (डॉ.) विजय सिंह रा	59 ठौर
10.	भारत में ई-शिक्षा	डॉ. सूर्यकान्त शर्मा	67
11.	भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की यात्रा	मदन कुमार	69
12.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का युवाओं पर प्रभाव	रितेंद्र कौर, सुरेन्द्र कुमार	71
13.	नई शिक्षा नीति में युवाओं की भूमिका का वाणिन्यिक अध्ययन	डॉ. अनुराग शर्मा	76
14.	शिक्षा जीवन का मौलिक आधार	नवीन क्मार	81
15.	नई शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा और शोध	डॉ. पुनीता शर्मा	84
16.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भाषाई अस्मिता का प्रश्न	डॉ. दिनेश कुमार	88
17.	नई शिक्षा नीति का शुभारम्भ	साहिबा मलिक	92
18.	नई शिक्षा नीति: एक पहल	तन्न्	94
19.	नई शिक्षा नीति एवं महिला सशक्तिकरण	तनु सिंह	95
20.	नई शिक्षा नीति- भविष्य और चुनौतियाँ	रहमानी	97
21.	नर्ड शिक्षा नीति की अवधारणाएँ	महविश	99
22.	21वीं सदी की शिक्षा नीति	काजल 🛆	101





The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author(s). Neither the publisher nor the editors will be responsible for them whatever.

ISBN : 978-93-94424-47-0 | Overseas Branches

Copyright: Edited Edition 2023



디

Published by

#### ABS Books

Publisher and Exporter
B-21, Ved and Shiv Colony, Budh Vihar
Phase-2, Delhi - 110086

①: +919999868875, +919999862475

#### PRINTED AT

Trident Enterprise, Noida (UP)

#### ABS Books

Publisher and Exporter

Yucai Garden, Yuhua Yuxiu Community, Chenggong District, Kunming City, Yunnan Province -650500 China

#### **ABS Books**

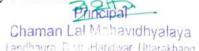
Publisher and Exporter

Microregion Alamedin-1 59-10 Bishek, Kyrgyz Republic- 720083 kyrgyzstan

All right reserved. No. Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, transmitted or utilized in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner Author/Editors. Application for such permission should be addressed to the Publisher and Author/Editors. Please do not participate in or do not encourage piracy of copyrighted materials in violation of the author's rights. Purchase only authorized editions.

#### FOOD FOR HEAL

By: Dr. Anamika Chauhan & Dr. Muzamil Jan





1.

# Effects of Nutrition Research on a Long & Healthy Life

Chauhan\*

#### TO ME TO THE PERSON

maplete food supply must be considered in order to nutrition. The main sources of human nourishment and of plants, animals, and their diverse parts.

and development of both humans and animals, as prevention and management of disease, all depend nutrition. In order to maintain functionality and nutrition is essential. The foundation for healthy and robust economies is basic and applied research and robust economies is basic and applied research sections between nutrition and non-communicable nutritional composition, and nutrition monitoring.

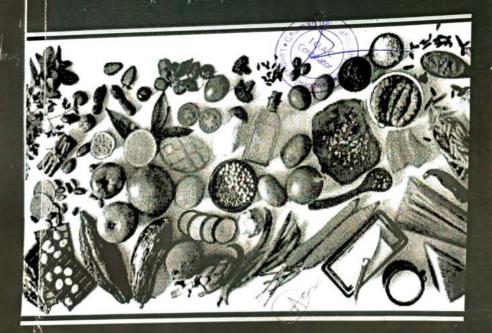
Department of Home Science, Chaman Lal Mahavidhalya, Landhora,

Department of Home Science, M.K.P. P.G. College, Dehradun



# Food for Heal

Anamika Chauhan Muzamil Jan



नारी का अस्तित्व

( साझा काट्य संग्रह)



डा सीरा च



#### अस्तित्व ( साझा काव्य संग्रह) गदिका - डॉं. मीरा चौरसिया

प्रकाशक – इंकलाब प्रकाशन गोरेगांव, पश्चिम ,

मुंबई , महाराष्ट्र , भारत पिन – 400062

दूरभाष - 9819273616

ई मेल : inkalabprakashan@gmail.com

inkalabebooks@gmail.com

वेबसाइट : www.inkalabhindi.in

मुद्रक - खुशबू प्रिंटर्स, गोरेगांव, पश्चिम ,

मुंबई महाराष्ट्र, भारत पिन – 400062

प्रथम संस्करण : जनवरी 2022

ISBN 978-93-91834-46-3

मूल्य : ४०० रुपए मात्र ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक और प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश को पुनरुत्पादित, प्रतिलिपित नहीं किया जा सकता। किसी प्राप्य प्रणाली में संग्रहित नहीं किया जा सकता अथवा अन्य किसी भी प्रकार से चाहे इलेक्ट्रॉनिक, मेंकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग से संचित नहीं किया जा सकता। इस शर्त का भंग करने वाले पर उचित कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

सूचना - इस पुस्तक को त्रुटि रहित प्रकाशित करने का पूरा प्रयास किया है यदि फिर भी कोई त्रुटि पाई जाती है तो इसके लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है ।किसी भी प्रकार का न्यायिक क्षेत्र मुंबई , महाराष्ट्र होगा।

पृष्ठ । 2 नारी का अस्तित्व माझा काव्य सग्रह संपादिका - डॉ. मीरा चौरनिया

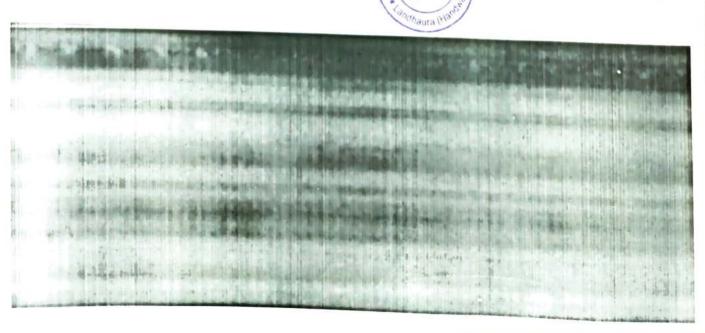


#### समर्पण



#### नारीशक्ति को सादर र

पृष्ठ | 3 नारी का अस्तित्व साझा काव्य सग्रह संपादिक



ahay





साझा काव्य संग्रह

# वदलते रिश्त



डॉ ॰ मीरा चौरसिया

Principal

Chaman Lal Make avidhyalaya Landhaura, Disti-manuwai uttarakhano



बदलते रिश्ते ( माझा काव्य संग्रह) संपादिका - डॉ. मीरा चौरसिया प्रकाशक – इंकलाब पब्लिकेशन, गोरेगांव, पश्चिम ,

मुंबई , महाराष्ट्र , भारत पिन – 400062

दूरभाष - 9819273616

ई -मेल : inkalabebooks@gmail.com

वेबसाइट : www.inkalabhindi.in मुद्रक - खुशवू प्रिंटर्स, गोरेगांव, पश्चिम , मुंबई महाराष्ट्र, भारत पिन – 400062

प्रथम संस्करण :सितंबर 2022 ISBN: 978-93-91834-01-2

मूल्य : 250 रुपए मात्र । © सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक और प्रकाशक की अनुमित के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश को पुनरुत्पादित, प्रतिलिपित नहीं किया जा सकता। किसी प्राप्य प्रणाली में संग्रहित नहीं किया जा सकता अथवा अन्य किसी भी प्रकार से चाहे इलेक्ट्रॉनिक, मेंकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग से संचित नहीं किया जा सकता। इस शर्त का भंग करने वाले पर उचित कानृनी कार्यवाही की जाएगी। किसी भी प्रकार का न्यायिक क्षेत्र मुंबई, महाराष्ट्र होगा।

विशेष सूचना- इस पुस्तक को त्रुटिरहित प्रकाशित करने का पूरा प्रयास किया गया है यदि फिर भी कहीं कोई त्रुटि पायी जाती है तो इसके लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है।



मन्ष्य जीवन ईश्वर का दिया एक अनमोल उपह हमेशा नसीहतें दी जाती हैं। अफसोस आज की 🥫 के लिए नसीहतों का कोई मूल्य ही नहीं रहा है। संसार में पिता-पत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, मित्र स्रंह, विश्वास तथा एक दूसरे के लिए त्याग पर 3 उन्हीं रिश्तों में कोई व्यक्ति अहम या अहकार भ टीनता व जलन की भावना से पीडित हो तो दोन चलकर इन रिश्तों की परिभाषा पुरी की पूरी बः है कि आज संतान संस्कारहीन हो गयी है। वजुर्ग न जी सकते न मर सकते। बजुर्गों की जिंदगी को व ने संतान को कभी जीवन में अंगुली पकड़कर चल कारण हैं कि जब उन्हें सहारे की जरूरत होती है जिसकी हर मांग को मां-बाप ने अपनी जरूरतों व बढ़ापे में क्यों बेगाने हो जाते हैं? सामाजिक म बदलावों के पीछे क्या कारण हैं ? कभी समाज व वाले संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। अब तो एकल पी कारण सिर्फ और सिर्फ एक है बदलते रिश्ते। सम्कारों के अभाव में माता-पिता का घर में जो नहीं रहा। जिसके चलते बाल संस्कार में भारी क वजह से उम्र दराज लोगों की घर में ही इज्जत क एक अलग स्थान बना लिया है।इस साझा काव्य बह रूप मिलेंगे जो दिखने में सुन्दर सलोने लेकि नंक है।

मैं इन्कलाब पब्लिकेशन, मुंबई गोरेगांव (श्री रमा फरना चाहगी जिन्होंने हर तरह से मुझे सहयोग नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपको यह साझा काव्य

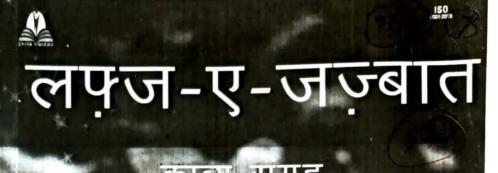
र्डा. मीरा चौरसिया समन लाल महाविद्यालय, लंढौरा रूडकी,उनराखंड।



संपादिका - डॉ . मीरा चौरसिया

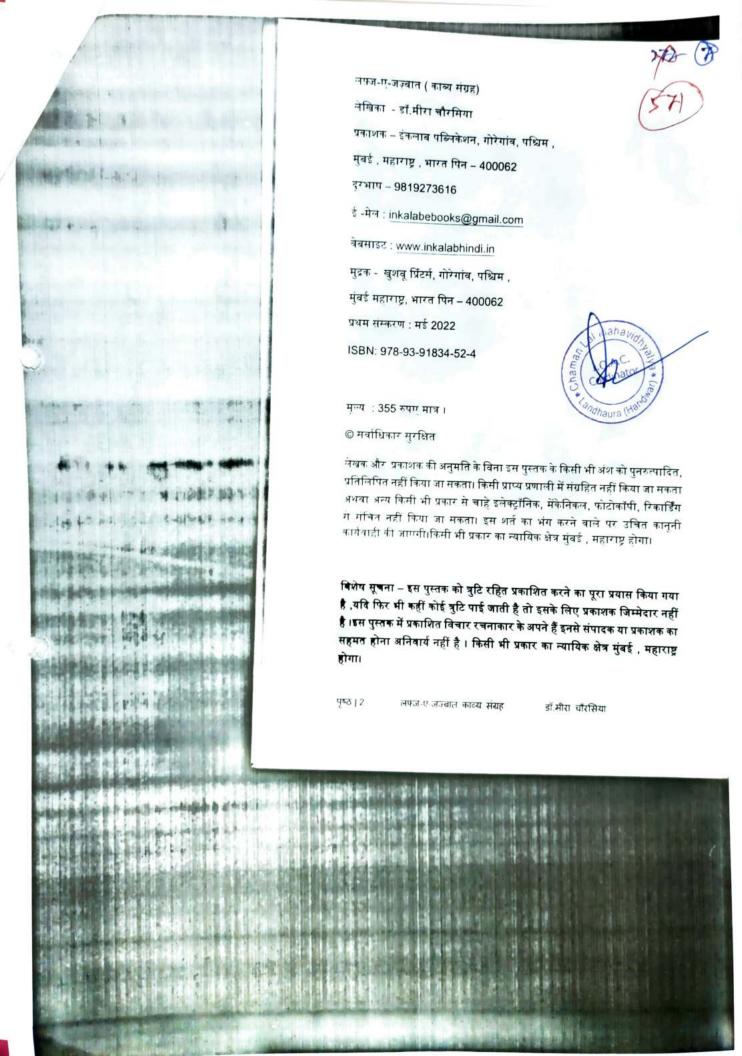
बदलते रिश्ते साझा काव्य संग्रह

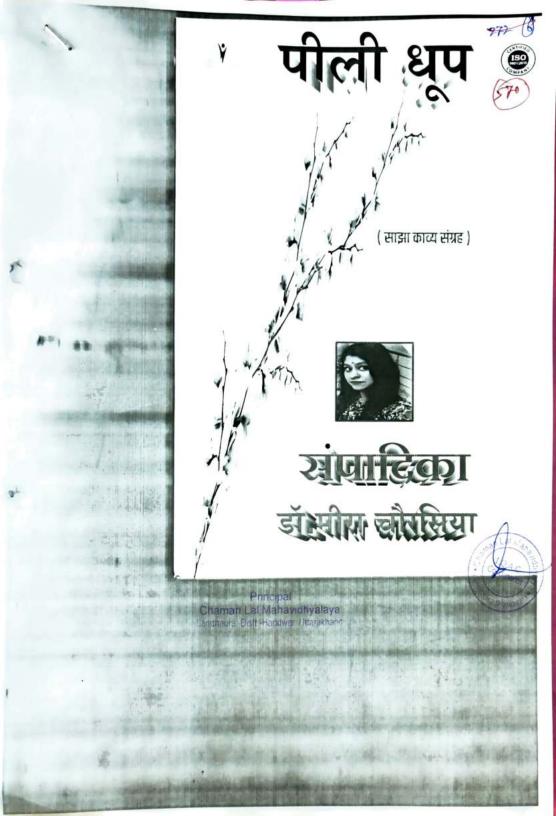




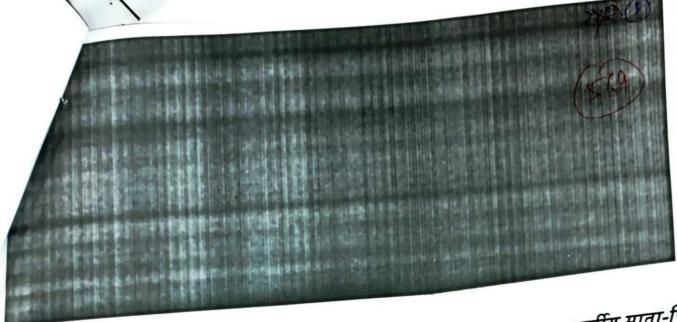
काच्य











पीली धूप (माझा काव्य मग्रह) संपादिका -डॉ. मीरा चौरसिया प्रकाशक – इंकलाव पब्लिकेशन, गोरेगांव, पश्चिम . मुंबई , महाराष्ट्र , भारत पिन – 400062 दुरभाष - 9819273616

ई -मेल inkalabebooks@gmail.com

वेबसाइट : www.inkalabhindi.in

मृद्रक - खुशव् प्रिंटर्स, गोरंगाव, पश्चिम ,

मुंबई महाराष्ट्र, भारत पिन – 400062

प्रथम सम्बरण : अप्रैल 2022

ISBN 978-93-91834-28-9

मृल्य : 350 रुपा मात्र ।

© मर्वाधिकार स्रक्तित

लखक और प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश को पुनरुत्पादित, प्रतिलिपित नहीं किया जा सकता। किसी प्राप्य प्रणाली में संग्रहित नहीं किया जा सकता अथवा अन्य किसी भी प्रकार से चाहे इलेक्ट्रॉनिक, मेंकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकार्डिंग में मंचित नहीं किया जा सकता। इस शर्त का भग करने वाले पर उचित कान्नी कार्यवाही की जाएगी।किसी भी प्रकार का न्यायिक क्षेत्र मुंबई , महाराष्ट्र होगा।

विशेष सूचना – इस पुस्तक को त्रुटि रहित प्रकाशित करने का पूरा प्रयास किया गया है, यदि फिर भी कहीं कोई त्रुटि पाई जाती है तो इसके लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है।इस पुस्तक में प्रकाशित विचार रचनाकार के अपने हैं इनसे संपादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार का न्यायिक क्षेत्र मुंबई, महाराष्ट्र होगा।

पीली धुप माझा काव्य मग्रह नृष्ठ | 2

मपादिका डॉ. मीरा चौरमिया

स्वर्गीय माता-र्ग हरिराम चौररि तुलसी चौरसि को सादर सम।





पीली धूप साझा काव्य मंग्रह पृष्ठ | 3

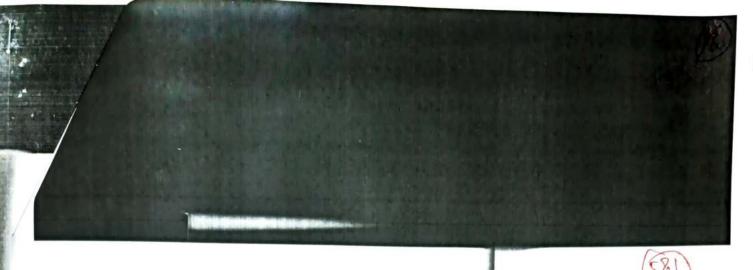


# दलित पत्रकारिता वर्तमान दशा और दिशा

*संपादक* डॉ. राम भरोसे







#### संजय प्रकाशन

4378/4 डी-209, जे.एम.डी. हाऊस अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 23245808, 41564415

मो.: 9313438740

C

E-mail: sanjayprakashan@yahoo.in

ISBN 978-81-946083-5-6

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 750.00

शब्द संयोजन : **हर्ष कंप्यूटर्स** दिल्ली-110086

*मुद्रक :* **रोशन ऑफसेट प्रिंटर्स** दिल्ली-110053



सम्पादक की

इस वर्ष हमने आम्बेडकरी पत्रकारिता व वर्ष इस पुस्तक का आना अपने में विशे वर्तमान दशा और दिशा' नामक इस र का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं वि निकालकर इस पुस्तक हेतु अपने लेख अंबेडकर ने 1920 में मूकनायक पत्र नि की नींव रखी। मूकनायक के पहले अं कि जब तक दलित-बहुजनों का अपना स्थिति में कोई गंभीर सकारात्मक परिव भी इशारा किया था कि आने वाले सम बनकर रह जाएगा। वर्तमान स्थिति मे

मान्यवर कांशीराम जी ने भी इस अपना मीडिया खड़ा करना ही होगा अ सिर्फ मजाक ही बनाया जाता रहेगा। मुख्यधारा की मीडिया पर सरसरी नि मीडिया में दलितों-वंचितों या बहुसंख्यको किस तरह मसाले लगाकर उनकी स ही नहीं मुख्यधारा की मीडिया में सवा अंदाजा दिन प्रतिदिन के खबरों को प

पिछले कुछ वर्षों से लोकतंत्र व आज इतनी कमजोर बेबस निस्सहाय से इस कदर भटका दी गई है कि अ





#### मीडिया और वर्तमान बाजारवादी संस्कृति में महिलाओं की स्थिति

#### डॉ. मीरा चौरसिया

आधुनिक समय में जनमाध्यमों में टेलीविजन एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा हुआ है, टेलीविजन श्रव्य एवं दृश्य माध्यम होने के वजह से दर्शकों में त्यादा विश्वसनीय है। प्रिन्ट पत्रकारिता में नेता लोग अपने कहे हुये कथनों से मुकर कर मीडियों पर ही उल्टे आरोप लगा देते हैं और कहते हैं मीडिया ने मेरे को गलत दंग से तोड मरोड कर प्रस्तुत किया है, लेकिन टेलीविजन पत्रकारिता में दृश्यों के साक्षात प्रकटन से मुकरने में उसकी स्वयं की स्थिति हास्यास्पद एवं अविश्वसनीय हो जाती है।

संचार के विभिन्न साधनों का विकास मानव सम्यता के विकास के समान्तर चलता है, यह कहना गलत न होगा कि यह दोनों वाते एक दूसरे के समान हैं, संचार के अभाव में सम्यता के वर्तमान विकसित खरूप की कल्पना भी नहीं करी जा सकती थी। सूचना के महत्त्व से मनुष्य समाज भली-भांति परिचंत है और इन सूचनाओं का संप्रेषण ही उसे निरन्तर नये विचार की और अग्रसर करता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि आधुनिक सम्यता में सूचना से अधिक जीवतआली कोई भी हथियार नहीं हो सकता पुरानी व्यवस्थाओं को बदलने से लेकर नये-चये वैद्यानिक अविष्कारों तक सभी प्रकार के परिचंतनों में सूचनाओं को अहम गूमिका होती है। सूचनाओं के आदान प्रदान की इस प्रक्रिया को 'संचार' कहा जाता है,

1 जुलाई 1911 को कोर्लोम्बया ब्राइकास्टिंग सर्विम ने अपने न्यूयार्क टेलीविजन स्टेशन से प्रतिदिन 15 मिनट के समाचार बुलेटिन के प्रसारण के साव टीoबीo पत्रकारिता में पदार्पण किया। आज हर व्यक्ति घर बैठे ही दुनिया के



्र चमन संदेश

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा जनपद हरिद्वार

Effects of New Education Policy on Higher Education in India

Dr. Tarun Kumar Gupta

Assistant Professor, Deptt. of Mathematics Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhaura

#### INTRODUCTION

The National Policy on Education (NPE) is a policy formulated by the Government of India to promote education amongst India's people. The policy covers elementary education to colleges in both rural and urban India. The first NPE was promulgated by the Government of India by Prime Minister Indira Gandhi in 1968, the second by Prime Minister Rajiv Gandhi in 1986, and the third by Prime Minister Narendra Modi in 2020. The National Education Policy 2020 (NEP 2020), which was approved by the Union Cabinet of India on 29 July 2020, outlines the vision of India's new education system. The new policy replaces the previous National Policy on Education, 1986. The policy is a comprehensive framework for elementary education to higher education as well as vocational training in both rural and urban India. The policy aims to transform India's education system by 2021. The language policy in NEP is a broad guideline and advisory in nature; and it is up to the states, institutions, and schools to decide on the implementation.

It aims to increase state expenditure on education from around 4% to 6%

of the GDP as soon as possible.

In January 2015, a committee under former Cabinet Secretary T. S. R. Subramanian started the consultation process for the New Education Policy. Based on the committee report, in June 2017, the draft NEP was submitted in 2019 by a panel led by former Indian Space Research Organisation (ISRO) chief Krishnaswamy Kasturirangan. The Draft New Education Policy (DNEP) 2019, was later released by Ministry of Human Resource Development, followed by a number of public consultations. The Draft NEP had 484 pages. The Ministry undertook a rigorous consultation process in formulating the draft policy: "Over two lakh suggestions from 2.5 lakh gram panchayats, 6,600 blocks, 6,000 Urban Local Bodies (ULBs), 676 districts were received." The vision of the National Education Policy is:

"National Education Policy 2020 envisions an India-centric education system that contributes directly to transforming our nation sustainably into

Chaman Lal Mahavidhyalaya

378

# "मुस्तकालम् पर कई दि देश की का ए आव"

डॉ. कुलदीप कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, पुस्तकालय विज्ञान विभाग चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

#### प्रस्तावना

शब्द शिक्षा व्युत्पत्ति हे अनुसार लैटिन शब्द एडुकेयर और एड्यूसर से लिया गया है। एडुकेयर का अर्थ उठाना यानेषण करना है, जबिक एड्यूसर शब्द का अर्थ है आगे लाना या वाहर निकालना। कुछ अन्य नोगों का मानना है कि यह शब्द एक अन्य लैटिन शब्द एडुकेंटम से लिया गया है जिसके दो एक हैं। 'ई' का तात्पर्य अंदर से बाहर की ओर गित है और डुको का अर्थ है विकास या प्रगति इस प्रकार, शिक्षा का उद्देश्य एक शिक्षार्थी या बच्चे को उसके अंदर छिपी छिपी क्षमता को ग्रहर लाने और विकसित करने के लिए एक पौष्टिक वातावरण प्रदान करना है और उसका त्थ्य भी हैं। विकास और प्रगति। इसलिए, शिक्षा को 'सीखने की प्रक्रिया कहा जा सकता है जंमनुष्यों में होती है और उन्हें जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन भर सीखने की अनुमित देती हैं'।शिक्षा में तीन अलग अलग पहलू शामिल हैं: ज्ञान, विषय और प्रक्रिया:

व्यापक अर्थों में, जा के रूप में शिक्षा को किसी भी कार्य या अनुभव के रूप में परिभाषित किया जा सकता जिसका किसी व्यक्ति के दिमाग, चरित्र या शारीरिक योग्यता पर रचनात्मक प्रभाव पड़ता , जैसे यात्रा, पढ़ना, वातचीत, या एक पीढ़ी से एक पीढ़ी तक विचारों का संचरण। यह किस भी कार्य या अनुभव को संदर्भित कर सकता है जिससे मनुष्य बाद में सीखता है। शिक्षा के दूसरा अर्थ अनुशासन है जो विषय आधारित है जो यह इंगित करता है कि यदि किसी व्यक्तिने स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय आदि जैसी स्थापित प्रणालियों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त के है, तो वह शिक्षा सही प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राप्त हुई है। तीसरों भावना शिक्षा से एक क्रिया के रूप में संबंधित है, जो एक अत्यंत आवश्यक और सार्थक अवधारणा है।

हालाँकि, जब शिक्षा की बात आती है, तो प्रक्रिया पर चर्चा करना हमेशा क्युबेश्यक होता है। शिक्षा से कोई व्यक्तिया समाज कँसे लाभान्वित होता है? नतीजतन, हमें हुँक कि अधिकार करना चाहिए, हमारेसमाज में शिक्षा प्रणाली जिसके माध्यम से किसी भी खुक्ति या इंसान को शिक्षित किया जा स्कृता है और इसे स्कूल से लेकर कॉलेज तक, विश्वविद्यस्थानिक से लेकर शिक्षा के मंदिर तक वृद्ध भी कहा जा सकता है। यह देखा गया है कि हमारे देश भारत ने हमेशा एक सभ्य जीवन प्राप्त करने की एक विधि के रूप में इसके लिए भन्ने देने से ज्यादा

म एक प्रमुख 🎥 रखता ह, जा पूछ एपलासक कारा व कारा कारा क

2012 के अनुसार, भारत की शिक्षा प्रणाली जाित संरचना पर बनी है। छात्र की जाित ने उसे प्राप्त की गई शिक्षा के प्रकार को निर्धारित किया। ब्राह्मणों को धर्म, दर्शन और वेदों के बारे में पढ़ाया जाता था। उन्हें पवित्र मंत्र सिखाए गए। क्षत्रियों को युद्ध की विभिन्न अवध्यारणाओं की शिक्षा दी जाती थी। उन्हें तीरंदाजी, तलवारबाजी और अन्य कौशल सिखाया जाता था। वैश्य कई युक्तियों और सिद्धांतों में महारत हासिल करते थे जो एक व्यवसाय को अच्छी तरह से चलाने के लिए आवश्यक थे लेकिन शृद्धों को स्कूली शिक्षा तक पहुंच से वंचित कर दिया गया था। हालाँकि, वेद ही एक मात्र ऐसी चीज थी जो अन्य तीन जाितयों में समान थी।

किसी भी देश को सम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक, एवं राजनैतिक प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है। भारत को शिक्षा प्रणाली आज विश्व की दूसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है।

#### स्वतंत्रता के बाद भारत में बनी शिक्षा समितियाँ

अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत में स्वत्रंता के बाद कई शिक्षा समितियाँ वनाई गयी।

- डॉ. एस. राधाकृष्णन आयोग वर्ष 1948-49 में गठित किया गया जिसमें विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की गयी।
- मुदालियर शिक्षा आयोग का गठन वर्ष 1952-1953 में गठित किया गया जिसको माध्यमिक शिक्षा आयोग भी कहा।
- डॉ. डी.एस. कोठारी आयोग का गठन वर्ष 1964-66 में गठित किया गया जिसमें सामाजिक उत्तरदायित्व व नैतिक शिक्षा पर ज्यादा ध्यान दिया गया।
- आचार्य राममूर्ति समिति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर पुनर्विचार वर्ष 1992 एक सजग व मानवतावादी समाज के लिए शिक्षा का सही तरीके से इस्तेमाल।
- एम.बी. बुच समिति वर्ष 1989 दूरस्थ शिक्षा माध्यम पर बनी पहली शिक्षा समिति
- जे.राम. रेडडी समिति वर्ष 1992 दूरस्थ शिक्षा पर केन्द्रीय परामर्श समिति
- 7. प्रो. यशपाल समिति 1992 बोझमुक्त शिक्षा की संकल्पना
- 8. रामलाल पारेख समिति 1993 बी.एड. प्रचार समिति
- 9. प्रो. खेरमा लिंगदोह समिति 1994 पत्राचार बी.एड. अवधि 14 माह तय की गयी

शिक्षा नीति पर सबसे पहले इंदिरा गांधी ने सन् 1968 में कार्य शुरू किया, उसके बाद राजीव गांधी ने भी 1986 में इसमें जरूरी बदलाव किये, 1992 में प्रधानमंत्री नरिसम्हा राव ने भी इस में जरूरी बदलाव किए, यह देखा गया कि पुरानी शिक्षा नीति से शिक्षा और उन्नित की प्रगित कहीं ना कहीं रुक गई है इसी कारण शिक्षा नीति में भी नया परिवर्तन लाने के लिए सोचा गया नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षा प्रणाली में बदलाव का सुझाव इसरो के पूर्व प्रमुख के कस्तूरीरंगन ने दिया राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को तैयार करने के लिए विश्व की सबसे बड़ी

#### Science and Philosophy of Alankar Siddhant (Theory of Poetic Figures): A Study of Indian Aesthetics

teri tile eep oft ans era pti can teri ilo ans ofo ara ilu dd rab era k er sf ot

Dr. Mukesh Kumar Gupta
Asst Professor, Dept. of English,
Govt. Degree College, Margubpur
(Haridwar)
and
Dr. Deepa Agarwal
Chaman, Lal Mahavidhyalaya,
Landhora, Haridwar Distt.

The essence of the Vedic and Non-Vedic religions, sectarians, concepts, philosophical thoughts and doctrines of different schools has considerably enriched and sweetened Indian philosophy, its scope is so great that span is so vast that we find no such line of Indic study that is no perfumed with its essence. Truth, beauty and happiness are the ends of the human life. All the ways and views of the Indian life aim at them and all Indian philosophies- theist and atheist preach them in their own ways. The tradition of Indian aesthetics was explicit in the Pre-Vedic civilization of India and the contributions of Pre-Aryan, Co-Aryan and Anti- Aryan lives particularly in the fields of dance, drama, music, paintings etc. Indian aesthetics endeavor to justify and establish that the sweet sources of human beats are beyond the reach of words and binds or the criteria of reasoning. From western

in each case is one of moderate melancholic acceptance of disappointment with an irritable but unprotesting gloominess and a bleak recognition of the self's and life's own limitations. The poet Keats here seems to give went to a truth that love, beauty and time are subject to depletion. It can, therefore, be predicted that the divanyartha' of the obove stanza, is the evanescence of human love and beauty. Realization of ultimate truth through the material possibilities is an exquisite example of vastu dhoani.

Again, the cited lines:

Flood-tide below me! I see you

face to face!...

The simple, compact, well joined

scheme, myself

disintegrated, every one disintegrated yet part of the scheme.

(Walt Whitman Crossing Brooklyn Ferry)

The lines above begin on the factual, realistic level and at last the poet considers his ties with the past, present and future, Here "I" symbolize the individual and the collective self of the universe, a long catalogue of the scenes and sights and human activity constitute the shared experience of man from generation to generation. Thus the matter of fact tone of the present verse suggests that past, present and the future are thus linked up in a cosmic unity, all pervasive and universal. Infact, the scene itself reflects the universal fact and hence this is an example of 'vastu-dhvani'.

Poetic Figures satisfy the basic demand of human nature, i.e the pleasant surprise. In the infancy of the world, neither poets themselves nor their auditors are fully aware of the excellence, poetic figure and sentiment of poetry: for it acts in a divine and unapprehended manner, beyond and above consciousness; and it is reserved for future generations to contemplate and measure the mighty cause and effects in all strength and splendour of their union.

#### Literary Theories and Philosophy of Literature

The expression attains a heightened beauty due to the application of acquired skill. Here, the acquired skill means the technical art of the poet acquired by teaching or practice. This far excels the beauty of individual elements such as words, meaning, attributes and poetic figures. It should be understood that the subject-matter is with no attraction. The poet, by his art, imagines a divine beauty in it and its character becomes potent and prominent, manifesting a new form of beauty. And art is not different from alankar or poetic figure.

Anandvardhana unfolds the importance of 'alankar'. He

#### शरीरीकरणं येशां वाच्यत्वे न व्यवस्थितम्। वेऽलंकाराः परां छायां यान्ति ध्वन्डग्तां गताः।।

terminate compared and compared

(Acarya Vishveshwar, Dhvanyaloka,)

Explaining his views about alankar, he says that after getting transpartha, alankar not only attains common bodily experience but also glitters with the glimmering grace or leavage. In other words, Acarya Anandvardhana says that poetry becomes lovely with figures of speech-personification, simile, metaphor and the rest-having a 'dhvam' causing beauty or aratus. As already stated, this type of 'dhvam' is recognized in the suggestion of an alankara through an alankara or a vastu. According to the western tradition also, 'a figure, therefore, is effective only when it appears in disguise', that is to say, when it is shaded by the brilliance. Anandvardhana considers the appropriate employment of alankar as alankar dhvami.

R Parthasarathy, the Indian English poet makes the best use of figures of speech in explaining the complex human feelings. In his poetry, we have padagata and vakyagata dhvani. They are best explained through the fusion and transmutation of image, symbol, metaphor, rhythm and tone. The lines:

Across the seas a new knowledge, sudden and unobtrusive as first snow transforming the landscape, Dhvani Theory: Understanding Meaning of a Literary Composition 31

rinses speech, affirms the brown shin.

and the heart beating to a different rhythm.

(R. Parthasarathy)

Here, by employing the poetic figure 'simile', the poet says that as with the change in the season circle snow converts the appearance and causes a better and pleasure-giving sight all around the landscape, similarly a new understanding of himself and of Indian with the intention of identifying himself with Indian society totally after passing a year in England emerged in Parthasarathy's mind and hear. Thus new emergence in Parthasarathy's Tamil soul has been compared to snow due to common factors like freshness, natural occurance and transforming quality between them. This can be treated as instance of alankara-dhavni.

Further, Rasa Dhvani or suggestion of aesthetic experience is abhidha-born-dhvani, some emotional content, 'rasa' or a 'bhava' that is purposed to be suggested and creates the charm. Moreover, there is little difference between rasa and rasadhvani except that the latter concept stresses the fact or rasa being vyanigya, that is, suggested. According to Anandvardhana, caratva resides where a rasa or bhava becomes tangibly felt by virtue of the dexterous management of the verbal art by the poet, without the rasa being "named" as such although such avoidance cannot be assured always. One important contribution by Anandavardhana has been the dentification of an angin rasa, the principal relish. That supports the widely accepted principle of unity of impression which should characterize a poem, narrative or otherwise. Even in the tragedies where karuna and bhayanak rasas are supported to be jostling together, on central emotion can be located, for example, of the four major tragedies of Shakespeare's, bhayanaka rasa, may be discovered in 'Macbeth' while the karunna rasa, a product of the development of the sthayi of soka, can be identified in the other three tragedied of Hamlet, Othello and King Lear. Annandavardhana has constantly reminded the poets that the only purpose of mining poetry is the evocation of rasa and not mere narration of a fact or story. He has unequivocally stated that whatever material is prouduced in poetry is all oriented to the ending of the desired meaning or rasa even as a lamp is lighted when for the obtainment of light'. (RS Tiwari, A Critical Approach is Classical Indian Poetics)

In order to apply 'rasa dhvani' it is also indispensable to take into account the following parts of 'rasa-dhvani' -Broodhvai' has been divided into eight classes, designated as rosa rasabhasa, bhava, bhavabhasa, bhavodaya, bhava-sandhi bhava-sandhi, bhava-prasama and bhava sabalata. Thus rasa-dhvani comprises the entire gamut of rasa or the emotional complex. The emotions called 'bhava' have been classified into mo broad categories, designated as the "Sthayi or the Permanent and 'vyabhican' or Transitory. The 'sthayis' are those emotions which have been regarded as dominant in the humas emotional life as compared with the 'Vyabhicani' which are considered as of a transient nature, rising and disappearing in the service of the dominant emotions. Bharat sets forth his famous 'Rasa-sura' thus:

vibhavanu bhav vyabhicari-snyogad-rasa-nispattih

#### विभावानु भाव व्यभिचारि-संयोगाद्-रस-निश्पितः

The formula means that Rasa is prouduced by a combination or commingling together of the 'wibhnate'. 'Anubhavas' and 'Vyabhicaris' which may respectively be said to be causes or determinants, conqueents or ensuants and transitories (as alred said) or assistants.

He is explicit that Rasa is so called because it is capable of being tasted or relished: "rasa iti kah padarthah? atrocyale, asvadyatvat" ''रस इति कः पदार्थः? अत्रेच्यते। आसवदात्वान् ''।

A striking example of bhava-sabalata, however, is available in the following verse form Shakespeare's Macheth:

Seyton... I am sick at heart.

point of view it is known ordinarily by the name of philosophy of literature and literary criticism but from Indian point of view, it is the system of Indian Aesthetics.

What the critics call philosophy of literature and science of Indian aesthetics, the traditional Indian school name them Ras Siddhant of Bharat, Alankar Siddhant of Bharah, Riti Siddhant of Vaaman, Dhvani Siddhant of Anandhvardhan, Vakrukti Siddhant of Kuntak, Auchitya Siddhant of Kshemendra. These sanskrit siddhants (theories) are the result of tap or devotion of ancient Indian acharyas from Acharya Bharat to Pandiraj Jagannath and deal with each part of the literary text systematically. Its range is very wide which includes metaphysical, psychological, epistemic, logical and critical points of view.

In chapter xvii of Natyashastm, Bharata has discussed the thirty-six characteristics of poetry, more precisely, dramatic poetry, the first of which is designated as "bhushan" which means ornament and which is defined as adorning a composition with alankars (poetic figures). Etymologically, the word, 'alankar' (figure) which comes from the Rigaved, has two components: alan+kri. It is born in two ways: 'alankratiti alankarh' i.e. anything that embellishes is 'alankar' (figure) and alankriyateyanenetyalankar i.e. a thing by which an article is embellished is called 'alankar' (figure). Thus the word 'alankar' (figure) literally means ornament or embellishment.

Rajshekhar, speaks of 'alankar' (figure) as the seventh Vedang (a limb of the Veda) as an addition to the well-known six auxiliaries. It includes philosophical and technical aspects of poetic process, focusing upon the uniqueness of poetic utterances. According to Bhamah, 'alankar' is the most essential element of poetry and it consists in the striking manner of putting a striking idea in an equally striking words. To him 'alankars' (figures) are as necessary factors in the creation of poetry's beauty as ornaments are contributory to the charm of the lovely face of a young damsel. Thus poetry

should be possessed of some charm created by the 'olankon'

Indian aestheticians have classified alankars (figures) on the basis of shabdaparavitisah and shabdaparivriliyasaha According to this classification, the alankars fall into three enegories shahdalankurs (the alankaras which decorates it. word) anhalenkan (the alanakan which decorates the meaning of the words) and ubhayalankars (the alankara in which the word and meaning has same place). In Indian poetics then is an exhaustive list of alankars which, for the sake of convenience, can be classified in the following was skabadalaskan (figures based on words or verbal figures) sodrukyamulakalankarı (figures based on similarii) undhagarbhalankars (figures based on difference syspealekelenkers (figures based on logic), shrinkhia mulabaleshers (figures based on chain), guddharthpatti. mulatalantars (figures based on Inference of hidden meaning) vergitaran bahirgat alankars (admixture of figures) and ubhayalankan (hybrid figures).

The Indian aestheticians hold that a poet uses alankare with a view to increase the beauty, enhance the qualities and for depicting the nature of the subject, to heighten the feelings, to delineate the action, activities and circumstances to expose the internal state and physical beauty, to exhabit the objective attractively and briefly, to depict the scene attractively, to characterize the spontaneous movements and to put the thought in tune with feelings.

Poetic composition has two aspects (a) shabda (word), the external figure and (b) artha (meaning), the connotation of the word. Both the shabda and artha are employed in such a way so enhance the poetic charm of a poetic composition Such kind of employment of shabda (word) and artha (meaning) is impregnated with 1. Shabdalankari (Verbal Figures) and 2. Artholonkon (Semantic Figures). The "shabda" is crucial and care is taken in all texts to define the term as precisely as possible. The word is regarded as the creative pencipal of the world and is accorded divine status (shabda

Brohmen). A word is like Ardhenarishwer, an androgynous God. It is a simultaneous embodiment, as Kalidas says, of 'Shrou and Shakti i.e. of word and meaning. Without feelings, emotions and sentiments it is like corpse even if ornamented. In "Vakyapadrya" of Bharathari, an Indian Sanskrit poet and grammarian - philosopher, we come across "Sphot", his theory of linguistics that "all kinds of meanings depend upon the power of words ... it is through words that all this difference is perceived ... there is no cognition in this world in which language does not figure ... all this (world/universe) is a parinati, transformation (product) of language." (Bharathari) It is not the body but the soul that matters. Without soul, which is the spirit of life, all ornamentation, embellishments fail to serve any purpose.

In aesthetics, Kavya (poetry) means all types of creative writing. It is a charming work of art producing pieces of beauty that gives pleasure to the appreciator of beauty. This charming work of art comes into existence by the creative power of the poet in the form of words. Therefore, karya formation is like stringing of a garland which is possible only with the help of words. Bhamah says that Words are like flowers. As flowers with different fragrances and of various forms, kinds and colours are available to a garland maker; similarly, words of different sounds, meanings, forms, types and associations are available to the poet. The garland-maker is required to take into account the length of the garland, the objective for which it is intended to be used and the above mentioned four characteristics of the flowers before making the final selection. Consequently, the act of intertwining and setting aside the flowers continues till the final selection completely satisfies him. Similar is the case of words. What to pick and choose amongst the available ones, which are the most useful, depends on the capacity and vision of the poet. A good Karya, works basically on the following concept:

(a) Science of beauty

#### (c) Human psychology.

(b) Cultural values

Meaning is the soul of the word. It is on the element of meaning (archatates) that the whole importance of the word rests. Word proves to be usable in a poem by virtue of its most appropriate meaning. The poem that lacks meaningfulness well-turned expression, decency, logicality and intelligibleness is had poetry howsoever musical it may be. Refined words having graceful meanings lend havya its grace. Here, sense is permany to sound. The meaning alone lends 'havya' literary quality and also makes it pleasurable.

In Keeps the repetition of phoneme or sounds has two
effects intellectual and musical. The repetition here is used
for emphasis and more repetition is made to work up to an
emotional climax. Another function is modulation which is
improved by repetition. A masterful use of language in creative
form is self-evident in displaying poet's inclination to sound
and music in his poetry. Romantic poetry is the good example
of it.

"Ode on Intimations of Immortality" is one of the most famous poems of William Wordsworth, One of the highest peaks of the English poetry of the romantic period. Indeed, at is the high scater mark of poetry in the nineteenth century. Let us pick up few examples from the ode under review to exhibit the appropriate use of alankars. In the starting of the poem the expression "Now, while the birds thus sing a joyous song" and 'Fresh Flowers; while the sun shines warm' have the repetition of /f/, a fricative, voiceless and labio-dental and /sh / sound a fricative, voiceless, palato-alveolar and /s/ sound. It is the season of spring, and all nature is gay. The poet sees manifestations of joy in birds and lambs, but he is visited by a sad thought. The poet realizes that his grief is out of key with the joyous scenes of a bright May morning when in thousands of valley far and near, the children are picking fresh flowers and the sun is also warm. Here the soft sounds /

s/ and /sh/ are used by the poet as vehicle to delineate his romantic mood caused by the joyous scenes of a bright May morning.

Besides the repetition of similar or identical sounds in various combinations, Wordsworth also seems to be fond of using the repetitions of similar and identical phonemes or sounds in the end of the line. In the terminology of Indian aestheticians, this repetition has been termed as antyanuprasa alankar. Let us discuss few examples of this alankaras (figures) as in the lines "The Rainbow comes and goes/And lovely is the rose", and "Thou little child, yet glorious in the might/of heaven-born freedom on thy being's height". Sound is most important as a general effect. Its place in a poem is to that of rhythm. It not only gives pleasure to the reader, it seems to give an added significance to the words also. Similarly, In "The Rime of Ancient Mariner", Coleridge uses a wide variety of aural devices. He uses internal-rhyme ('blew ... flew'), and half rhyme ('speak ...break'). He uses assonance ('hot...copper') and a lot of alliteration ('fair...foam...flew... furrow...followed...free'); and the repetitions of words come to us partly as sound effects to the particular sort of experience being presented. Furthermore, through such devices as rhyme, alliteration, and assonance, the writer can give emphasis to particular words.

The following examples are also worth noting in this regard. The examples, "I hear. I hear with joy I hear!" (Wordsworth,) and "Then sing, ye Birds, sing, sing a joyous song!" are impregnated with emotional fabric. According to Indian aestheticians, repetition of a word more than two times shows the presence of Punaruktiprakusha alanhara that is used by the poet to delineate the heightened feelings. In the first expression the poet says it is the season of spring and all nature expression the poet says it is the season of spring and all nature is gay and so sees manifestations of joy in birds and lambs, but immediately he is visited by a sad thought. He realizes that his grief is out of key with the joyous scenes of a bright May morning, and is impelled to rejoice with Nature's dumb

creatures and shepherd boy at play. He forces himself into a wmpathetic gaiety. However, his mood of cheerfulness does not last long because a look at stray objects of nature reminds him that something has passed away from the face of the earth in a tone of sadness he asks himself where the glory and the dream have gone. Here the emotional fabric is further strengthened by the repetition of words 'hear' and 'sing' which have the repetition of phoneme /h/, /r/, /s/ and /ng phonemes. All these soft sounds besides emotional effect also give emotional range.

Thanks to the human heart by which we live Thanks to its tenderness, its joys, and fears. To me the meanest flower that blows can give Thoughts that do often he deep for tears

At the end of this poem Wordsworth has a greater sensitivity and responsiveness than ever before. He feels that the 'philosophic mind' has not decreased but, on the contrain. has increased the power to feel. The meanest flower is significant now not only because, like the small celandine, it speaks of age, suffering and death, but because to a man who is aware of man's mortality. Now the world becomes significant and precious. The knowledge of man's mortality-this must be carefully noted in a poem presumably about immortalinnow replaces the 'glory' as the agency which makes things significant and precious. Here the poet has again repeated word 'thanks' two times that is vipsa alankar of Indian literary theory. According to Indian acharyas, here vipsa alankaris used to delineate his gratitude towards the working of nature which has enabled him to see, feel and hear,

Similarly, Shelley who calls the poet as the author of the highest windom, pleasure, virtue and glory. He is the happiest. the best, the wisest and the most illustrious of men. His poem Ode To A Skylark\* is worth appreciating in this regard. His skylark is a 'blithe spirit', 'an invisible thing', 'a mystery'

Hait to ther, blithe spirit!

Science and Philosophy of Alanken Sidelheard (Theory of Poetic Figures) 43

Bird thou never wert-That from heaven or near it Pourest thy full heart

In profuse strains of unpremeditated art

It is an expression of hope, an expression of faith, hence an air of sanguineness blows through it and it is absolutely free from gloom. The poet hails the bird, but then he immediately considers whether the sound that he hears should be attributed to an actual living thing; it may be only "blithe spirit". Whatever it is, it is flying near the zenith in the sky and from there is pouring out its feeling in perfect music. The Skylark's music is like a continuous flood, because the sounds are flowing without interruption. It is spontaneous and natural. The Skylark is expressing its feelings without any preparation. In this poem the

Skylark symbolizes the continuity of the poet's imaginative life. Here, by the creative use of language Shelley creates poetic doubt that shows the presence of sandeha alankar of Indian literary theory. Shelley allows the emotion to go its own life and delights in new accesses of thought and feeling.

Higher still and higher Form the earth thou springest Like a cloud of fire The blue deep thou wingest

And singing still dost soar, and soaring ever singest

Addressing the bird, Shelley idealises the singing of the skylark. He finds an inexhaustible joy in him. The poet enjoys the lot of the skylark because the joy hidden in its song is everlasting. Human beings can never enjoy such as delight. When Shelley hears the sweet song of the skylark, he feels the bird is singing and flying in the high regions of the sky. Shelley says it sings its merry note while it flies. And it flies while it sings. In other words it flies and sings simultaneously. Here the poet has used the words 'sing' and 'soar' in their different

form interchangeably to show the qualities of singing and form interchange and fiving of Skylark are complementary to each other. This creative use of language shows the presence of upmeyopana alankar of Indian literary theory.

Shalley's Ode to Skylark is also conspicuous for the creative use of contradictory words but this contradiction is seen only on the surface, at the final stage the apparent contradiction associated with them blows off and a special charming poer meaning emerges as the final import of the entire passage Sucapparent contradiction (woodha) which percolates finally man charming poetic meaning gives to a few figures in Indian Literage Theories under the category virodhagarbha alanhar (figures base) on difference). Shelley's poetic expression "Our sweetest sungs are those that tell of saddest thought" is worth noting.

We look before and after And pine for what is not Our sincerest laughter

With some pain is fraught

Our sweetest songs are those that tell of saddest thought

Here the sweetest song and saddest thought are two contradictory things, animate things at surface level but a careful understanding of the poem removes this contradiction and provides poetic charm to the expression. Poet has spoken a great truth in superbly musical lines that touch the heart He has presented a true picture of human life. He looks into the future, and hopes that it will bring him great happiness Besides, even man's truest and best laughter is mixed with a little bit of pain. Even when man is happiest, his memories of pain and suffering never leave him. That is, man's sweetest songs are those that express his sadness and misery. Thus be using the language creatively under discussion, Shelley infuses the dark side of life with bright side.

The expressions like "Teach us, sprite or bird" "Praise of love or wine "Chorus hymeneal or triumphal chant" "Waking or asleep" all are contributing to the vivifying of the poet's sense of bewilderment as to the exact location of the Spirit of bird' or to express the emotions that evoke in the heart of poet. One has to remember that the skylark is beyond the poet's range of sight. He can listen only to the 'Chorus hymencal or triumphal chant' and feels 'waking or sleep' remaining all the while lost in a mystery as to the exact spot or altitude where the bird has taken its station. Considering from the angle, the appropriateness of the use of two objects opposite to each other are taken as alternatives with their own respective logics (pramaan) where one object can be accepted to the exclusion of the other, is discussed by Bhamah in his Kanyalankar as vikalpa alankar

What leaf-fring'd legend haunts about thy shape Of deities or mortals, or of both, In Tempe or the dales of Arcady? What men or gods are these? What maidens loth? What mad pursuit? What struggle to escape? What pipes and timbrels? What wild eestasy?

John Keats's "Ode on a Grecian Urn" is also instant of poetic genius in which the imagination of the poet is turned into experience needed for poetry composition with the use of creative language. A Grecian urn is often used to preserve the ashes of cremation, thus it is ugly and uninteresting. The urn is therefore an inartistic object transfigured by the poet's creative use of language and imagination into a magical artistic experience. The richness of the scenes inside the urn - the mortals and immortals, mountains and valleys, men and women, lovers and singers, and music and cheer - is a reflection of the poetic genius that essentially contributes to the creation of the poet and consequently to the composition of poetry through turning imagined objects and scenes into beautiful verses that travel with the readers to magical worlds by use of language which they think of as real, though they are not.

To conclude, the above examples prove to their mark

when put to the test of knowing the science and philosophy of alankar siddhant of Indian aesthetics. They bear intensity of music, passions and emotions, exaltation, elevation of transport, the irresistibleness of effect and the universality of thoughts and ideas. The secret of the appeal of the poets lie in the fact that kavya (poetry) is based on the fundamental qualities of human life and human nature. It aims not merely to delight but to transport and instruct too. Moreover, it comes from the heart of the poet and goes deep down into the heart of the reader. It can be said that it has unlimited expanse, extra-ordinary power and velocity, unprecedented majesty and universal appeal. The process of creativity of language accelerates the growth of the imagination and results in the creation of the poet who is regarded as an ideal source of creation in literature.

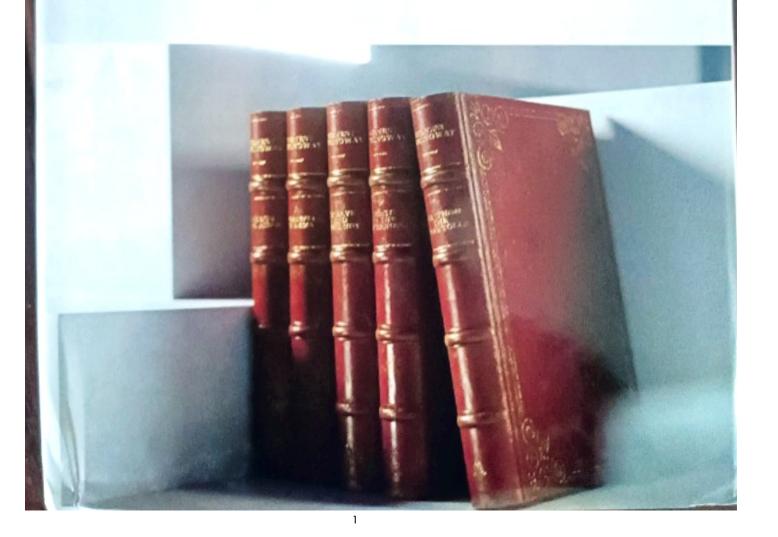
#### Works-Cited

- Abhinavagupta. Abhinavabhgrti. Ed. Ramakrishna Kavi. Poona: Gaekwad Oriental Institute, 1956.
- Bhgmaha, rcgrya. KguyglaAkgra. Ed. Devendranath Sharma. Patna: Bihar Rashtra Bhasha Parishada, 1925.
- Bharata. Ngtyaógstra Ed. Manomohan Ghosh. Calcutta: The Royal Asiatic Society of Bengal, 1950.
- Bhart[hari. Vgkyapdi. Delhi: Motilal Banarsidass, 1971. Print.
- Garrod, H.E. Ed. Keats Poetical Works. London: Oxford University Press, 1956. Hutchinson, Thomas. The Poetical Works of P. B. Shelley. London: OUP, 1978.
- Kapoor, Kapil. Literary Theory, Indian Conceptual Framework. New Delhi: Affiliated East-West Press Pvt. Ltd., 1998.
- Sharma, Shrawan K. Kuntaka's Vakrokti SiddhEnta: Towards an Appreciation of English Poetry. Meerut: Shalabh Publishing House, 2004.
- Tiwary, R.S. A Critical Approach to Classical Indian Poetics. Varanasi & Delhi: Chaukhamba Orientalia, 1964.
- Tyagi, Archana D.A Study of Shelley's Poetry in the Light of icErya Khemendra's Aucitya SiddhEnta. N. Delhi: Shalabh Publishing House, 2008.
- Wordsworth, William. The Poetical Works of William Wordsworth. Ed. Thomas Hutchinson. London: Oxford University Press, 1904.



# Literary theories and Philosophy of Literature

Editor Dr Deepa Agarwal



# Contents

Ack	nowledgement	ix
1.	The Doctrine of Aucitya and Western Poetics	1
	—Dr. Archna Tyagi	
2.	Dhvani Theory: Understanding Meaning of a Literary Composition	24
	—Dr. Bharati Sharma	
3.	Science and Philosophy of Alankar Siddhant (Theory of Poetic Figures): A Study of Indian Aesthetics	36
	—Dr. Mukesh Kumar Gupta and Dr. Deepa Agarwal	
4.	Psychoanalysis as a theory in Literature	47
	—Dr. Hemalatha K.	
5.	Swarnakumari Devi's The Wedding Tangle (Pāk Chakra) and Nabaneeta Dev Sen's Medea in the light of Rasa Theory	62
	—Dr. Manoj Kumar	
6.	Girish Karnad as a Landmark in Indian Post-Colonial Literature	73
	—Kavita	0.0
7.	Theory: Application and Translator's Invesbility in Question	83
	—Dr. Monika Gupta Aggarwal	
8.	Reflection of Gandhian Philosophy in Mulk Raj Anand's Untouchable and R.K Narayan's Waiting for Mahatma	93
	—Mayank Raiwani	

9.	Feminist Perspectictive of Rebecca Traister,s- All the Single Ladies: Unmarried Women and the Rise of an Independent Nation	103
10.	—Nidhi Vyas The Dialectics of Mythological Echoes in Mahasweta Devi's in Draupadi	110
11.	—Dr.Poonam Choudhary  Life Philosophy from Art to Creativity in the  Works of WilliamWordsworth	119
12.	—Dr. Anita Goswami  Diction of a Literary Composition: An Exposition in Vaman's Theory of Riti	130
13.	—Dr. Reena Verma  Ecocriticism in Thomas Hardy's Wessex: A critical study of Woodlanders	141
14.	—Dr. Versha Singh Post Modern Aspects in the novels of Chetan Bhagat —Dr. Swati	159
15.	भगवती चरण वर्मा का दर्शन लालित्य : 'चित्रलेखा' —डॉ॰ प्रेरणा पाण्डेय	171

#### Know your Author-



Dr. Deepa Agarwal exudes confidence and professionalism as an esteemed Assistant Professor of English at CLM, Roorkee, where she has been making significant contributions since April 1, 2017. With a Ph.D. from Gurukul Kangri University, Haridwar, and a post-graduate certificate in the teaching of English from The English and Foreign Languages University, Hyderabad, Dr. Agarwal possesses a strong educational foundation.

Her illustrious career spans over 13 years, during which she has honed her expertise in various domains.

Her current research interests lie in the realms of Indian plays/Drama, Professional Communication, Indian Writing in English, and Phonetics, demonstrating her commitment to exploring diverse facets of the English language.

Dr. Agarwal's scholarly endeavors have garnered recognition with the publication of 16 research articles/papers in distinguished Scopus/peer-reviewed international journals, national journals, conference proceedings, chapters in Edited books, and articles in renowned magazines. She has also authored two compelling books with ISBN, cementing her status as a prolific writer.

Driven by her passion for knowledge dissemination, Dr. Agarwal actively engages in the academic community, regularly participating in national and international seminars, symposia, conferences, and workshops, where she presents thought-provoking papers. Moreover, her experience as a chief editor of an annual college magazine and her tenure as Vice-Principal at Chaman Lal Mahavidhyalaya have equipped her with invaluable leadership skills and a holistic perspective on academia.

Currently, Dr. Agarwal thrives as an IQAC coordinator, leveraging her expertise to enhance institutional quality. Her unwavering dedication to her craft and her commitment to excellence make her a formidable force in the field of English education.



Satyam Publishing House

N-3/25, Mohan Garden, Uttam Nagar, New Delhi-110059 Mobile: +91-70420 82850, 9899665801 E-mail: satyampub\_2006@yahoo.com Price: ₹ 795.00 ISBN: 978-81-963156-2-7

